556

शारदा ग्रंथमाला-11

'शारदा पुरस्कार'

(2000 ई॰ से 2008 ई॰ तक)

सम्मानित महानुभावों / संस्थाओं के परिचय पत्र

प्रोफ़ेसर (डा॰) भूषण लाल कौल
डी॰ लिट

प्रकाशन प्रभाग :-
संजीवनी शारदा केन्द्र
आनन्द नगर बोड़ी, जम्मू - 180 002

© प्रकाशकाधीन

प्रकाशक

प्रकाशन प्रभाग

संजीवनी शारदा केन्द्र

आनन्दनगर, बोडी, जम्मू – 180 002

दूरभाष :– 0191-2501480

संस्करण प्रथम 2009

संख्या : 500

मूल्य : 20/-

'शारदा पुरस्कार'

(2000 ई॰ से 2008 ई॰ तक)

सम्मानित महानुभावों / संस्थाओं के परिचय पत्र

प्रोफ़ेसर (डा॰) भूषण लाल कौल

डी॰ लिट

क्रमांक 556

प्रकाशन प्रभाग :-

संजीवनी शारदा केन्द्र

आनन्द नगर बोड़ी, जम्मू।

अनुक्रमणिका

क्रमांक	सम्मानित महानुभाव/ संस्था	समारोह मुख्य अतिथि	पृष्ठ संख्या
1.	स्वर्गीय कश्यव बन्धु	स्वामी प्रेमनन्द जी	
2.	स्वर्गीय केशव खैबरी		
3.	स्वर्गीय टीका लाल टॅपलू	श्री इन्द्रेश कुमार जी	
4.	स्वर्गीय ज्योतिषी प्रेमनाथ शास्त्री		
5.	स्वर्गीय शहीद प्रेमनाथ भट्ट	स्वामी चिन्मयानन्द जी	
6.	प्रोफ़ेसर बलजिन्नाथ पण्डि		
7.	श्री त्रिलोकी नाथ तिक्कू	स्वामी अमृतानन्द जी	
8.	श्री दीनानाथ यक्ष	डा॰ विश्वमूर्ति शास्त्री	
9.	श्री अमर नाथ वैष्णवी	स्वामी गिरिजेशानन्द जी	
10.	शहीद सुनील कौल		
11.	शहीद सर्वानन्द कौल 'प्रेमी'	स्वामी प्राण नाथ भट्ट 'गरीब'	
12.	प्रोफ़ेसर (डा॰) भूषणलाल कौल	(भाई जी)	
13.	ज्योतिषी पण्डित केशव भट्ट	सेवानिवृत्त ब्रिगेडियर	
14.	ज्येष्ठा देवी प्रबन्धक कमेटी जीठयार – श्रीनगर	सुचेत सिंह जी	
15.	श्री अमरनाथ यात्रा संघर्ष समिति जम्मू	श्री लीला करण शर्मा	

प्रस्तावना

सन 1996 ई० के फ़रवरी मास में आनन्द नगर बोड़ी जम्मू में संजीवनी शारदा केन्द्र ने एक रजिस्टर्ड राष्ट्र हितैषी जन कल्याण प्रेरित सामाजिक–सांस्कृतिक ट्रस्ट के रूप में जन्म लिया और विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन द्वारा समाज में लोक प्रिय होने लगा।

आरम्भ में इस संस्था को अपनी उपस्थिति दर्ज कराने के हेतु पर्याप्त संघर्ष करना पड़ा। यह तो सौभाग्य की बात थी कि लगातार जन सहयोग मिलता रहा और हमारे सेवा कार्यों की न केवल चर्चा होने लगी बल्कि प्रशंसा भी होती रही। पर्याप्त संख्या में विस्थापित समाज 'संजीवनी शारदा केन्द्र' के साथ जुड़गया और युवा समाज के लिये चलाये जाने वाले कार्यक्रमों को न केवल सराहा गया अपितु विस्थापित युवा समाज इन कार्यक्रमों से लाभान्वित भी होने लगा। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सामूहिक शिवरात्रि महोत्सव, नवरेह समारोह एवं 'शारदा अष्टमी महायज्ञ' का आयोजन केन्द्र को लोकमानस का प्रतिनिधित्व कराने में सहायक सिद्ध हुआ। हर वर्ष केन्द्र के साथ नये नये सेवा कार्य जुडने लगे जिन में विचार गोष्ठियां, प्रवचन, स्कूली बच्चों के लिये बौद्धिक प्रति योगिताएँ युवा कलाकारों द्वारा संगीत एवं नृत्य प्रस्तुतियां एवं मेधावी छात्र छाआओं के लिये मंत्रणा केन्द्र आदि समाज में चर्चा का विषय बन गये।

सन् 1998-99 ई० में ट्रस्ट ने यह महसूस किया कि प्रतिवर्ष हमें अपने समाज के दो योग्य विद्वानों, समाज सेवकों, साहित्यकारों, चिन्तकों, पण्डितों, राष्ट्र हितैषियों, लोक उपकारक नेता जनों, कला कारों, राष्ट्र वीरों तथा माँ भारती के सपूतों को सम्मानित करना चाहिये। पुरस्कार के हेतु व्यक्ति के साथ साथ किसी संस्था का भी प्रावधान हो। सुझाव ट्रस्ट की एक बैठक में सर्वसम्मति से स्वीकृत हुए। केन्द्र के अध्यक्ष के नेतृत्व में हर वर्ष एक चयन

समिति व्यक्ति या संस्था का चयन करेगी। यह भी निर्णय लिया गया कि 2000 ई० से शारदा अब्टमी के महायज्ञ पर अथवा शिवरात्रि महोत्सव में शारदा पुरस्कार प्रदान किये जायें। 2000 ई० में पहली बार समाज के दो प्रतिष्ठित बन्धुओं को मरणोपरान्त 'शारदा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। 2001 ई० में भी समाज के दो महानुभावों को मरणोपरान्त यह पुरस्कार प्रदान किया गया। 2002 ई० में पहली बार प्रोफ़ेसर (डॉ०) बलजिन्नाथ पण्डित को उनके आजीवन काल में यह पुरस्कार प्रदान किया गया और उन्होंने स्वयं समारोह में उपस्थित होकर यह पुरस्कार ग्रहण किया। 2007 ई० में पहली बार एक संस्था – 'ज्येष्ठा देवी प्रबन्धक कमेटी – को 'शारदा पुरस्कार' प्रदान किया गया।

पुरस्कार स्वरूप सम्मान पत्र (Citation) की सज्जायुक्त एक प्रति के साथ अंगवस्त्रम एवं शारदा प्रदेश का द्योतक अत्यन्त आकर्षक स्मृति चिह्न भी प्रदान किया जाता है। यह पुरस्कार किसी व्यक्ति विशेष अथवा संस्था विशेष को केवल एक बार प्रदान करने का प्रावधान है।

2000 ई० से 2008 ई० तक 13 महानुभावों एवं दो संस्थाओं को यह पुरस्कार प्रदान किया गया। सन् 2003 ई० और सन् 2004 ई० में केवल एक एक महानुभाव को ही 'शारदा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

2000 ई० से 2008 ई० तक 'शारदा पुरस्कार' से सम्मानित महानुभावों के परिचय पत्र (Citations) एक संस्थान के परिचय पत्र के साथ क्रमबद्ध रूपसे पाठकों के अनुरोध पर पुस्तकाकार में प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

शारदाष्टमी
8 सितम्बर 2008 — प्रोफेसर भूषण लाल कौल

स्वर्गीय पण्डित ताराचन्द भट्ट 'बुल बुल'
उर्फ़
कश्यप बन्धु
(सन् 1898 -1985 ई०)
''शारदा पुरस्कार'' 2000 ई०

पण्डित ताराचन्द भट्ट 'बुलबुल' का जन्म चेत्र कृष्ण पक्ष नवमी सन् 1898 के दिन ग्यूर (नर पोरा त्राल – ज़िला पुलवामा) गाँव में स्वर्गीय पण्डित ठोकुर भट्ट के घर में हुआ। (ठोकुर भट्ट के दो अन्य पुत्र थे सत लाल भट्ट एवं द्वारिका नाथ भट्ट) ग्यूर गाँव गौरी–माता पार्वती का निवास रहा है और उस गाँव का असली नाम गौरी था जो बाद में परिवर्तित होकर 'ग्यूर' बना और आज 'ग्यूर' नाम को बदल कर 'नूर पोरा' रखा गया है। यह गाँव श्रीनगर से लगभग 40 किलो मीटर दूर है।

यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि कश्मीर भूमि में समय समय पर कई सन्तों, ऋषियों, समाज सुधारकों, लेखकों, पण्डितों, गणितज्ञों, नेताओं और प्रशासनिक अधिकारियों ने जन्म लिया है। 'बुल बुल' उन्ही में एक है।

तारा चन्द – तारक के समान उज्जवल और चन्द्र के समान शीतल तथा बुल बुल के समान मधुर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला महापुरुष, ब्रजानन्द आश्रम लाहौर के प्रिंसिपल ने उन्हें नाम दिया–कश्यप बन्धु

कश्यप– कश्यपमर के निवासियों के हितैषी और भाई बन्धु– सवजन, आत्मीय, भाई, मित्र, स्वजनों से स्नेह रखने वाला बन्धु जी के व्यक्तित्व के पाँच महत्त्वपूर्ण पहलू हैं–

(i) बन्धु जी एक समाज सुधारक तथा क्रान्तिकारी विचारक

(ii) बन्धु जी एक प्रशासनिक अधिकारी

(iii) बन्धु जी एक पत्रकार, कवि और लेखक

(iv) बन्धु जी एक समर्पित लोक हितैषी

(v) बन्धु जी एक निष्ठावान कश्मीरी

बन्धु जी ने अपने जीवन काल में कश्मीरी पण्डित समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन लोन की चेष्टा की। रूढ़िवादीरुग्न परम्पराओं का विरोध करते हुए उन्होंने आर्य समाजी विचार धारा के प्रति अपनी आस्था व्यक्त की। दहेज प्रथा का खुल कर विरोध करते हुए उन्होंने पुनर्–विवाह विशेष कर विधवा–विवाह का समर्थन किया और कश्मीरी पण्डितों की हठ धार्मिता को ठुकरा दिया। महिलाओं को साड़ी पहनने के लिये उत्साहित किया और स्वदेशी आन्दोलन से प्रेरित होकर पुरुषों के हेतु कुर्ता– पजामा अथवा धोती कुर्ता एक आदर्श पहनाने (Dress) के रूप में स्वीकारा। उन्होंने हास्यास्पद रीतिरिवाजों का डट कर विरोध किया। बाल–विवाह को अस्वीकार और विधवा विवाह को मान्यता दी। कश्यप बन्धु जी ने ही पुनर् जागरण हेतु कश्मीरी पण्डितों को यह जय घोष सुनाया– **'जयकारा - हर हर महादेव'**।

13 जुलाई सन् 1931 ई० के दिन बिना कारण कश्मीरी पण्डित जन आक्रोश का शिकार हो गये। महाराज गंज के केन्द्रीय बाज़ार में हिंसा प्रधान घटनाएँ घटित हुई और कई कश्मीरी पण्डित हिंसा की चपेट में आगये। निस्सन्देह अल्पसंख्यक कश्मीरी पण्डित रक्तस्नात होकर अमानवीय कुकृत्य से पीड़ित हुए। तब कश्यप बन्धु ने एक सच्चे जाति हितैषी और लोकनायक के रूप में त्रस्त

कश्मीरी पण्डित समाज को संगठित किया और उन्हें संकल्पबद्ध होकर संघर्ष करने की प्रेरणा दी।

'मुट्ठी भर अनाज का संकल्प (A handful of grain) अर्थात् 'मोछि फोल' की संकल्पना (Concept) जन मानस के सम्मुख प्रस्तुत कर वे उन्हें जातिहित अथवा समाज सुधार के हेतु शक्ति भर योगदान करने के लिये प्रेरित करते हैं।

बन्धु जी एक ऐसे समाज सुधारक थे जिन्होंने सम्मानपूर्वक जीवन जीने के हेतु शारीरिक श्रमकी महिमा को स्वीकारा और सक्रिय जीवन जीने की प्रेरणा दी। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात जब जम्मू कश्मीर में जन प्रतिनिधियों की सरकार बनी तो कश्यप बन्धु को 'देहात सुधार विभाग' का महा निदेशक बनाया गया और उन्होंने ही सर्वप्रथम 'हल्–श्री' आन्दोलन का नेतृत्व किया 'हल्–श्री' अर्थात ग्राम सुधार केहेतु 'अपनी मदद आप करो' का सिद्धान्त।

ग्रामीण समाज के पुनर् निर्माण एवं उजड़े हुए लोगों के पुनर् आवास के हेतु वे भरसक प्रयत्नशील रहे। इसके पश्चात् 1964 ई० में कश्मीर के उत्तरी इलाके में स्थित सॅनिवारी (वह जमीन जो प्रायः पाईन इलाके में गहराई में होती है।) को सोन–वारी (सोना उगलने वाली वाटिका) बनाने के हेतु उन्हें ग्राम सुधार प्रोजेक्ट के अंतर्गत प्रोजेक्ट ऑफिसर नियुक्त किया गया और यहाँ भी अपनी कार्य क्षमताओं से उन्होंने असम्भव को सम्भव में बदल दिया। एक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में उन का योगदान प्रशंसनीय रहा है।

बन्धु जी एक पत्रकार, कवि और लेखक के रूप में भी काफी चर्चित रहे हैं।

पहली फरवरी सन् 1931 ई० में मार्तण्ड पत्रिका का जन्म हुआ। सन् 1931 से सन् 1969 तक यह पत्रिका उर्दू भाषा में नियमित रूप से प्रकाशित होती रही। बन्धु जी इस पत्रिका के पहले सम्पादक थे। उन्होंने निर्भीक रूप से एक मेधावी पत्रकार का कर्तव्य कर्म निबाहते हुए इसे कश्मीरी पण्डितों का मुख पत्र बना दिया।

जब सन् 1938 ई० में किन्ही राजनीतिक कारणों से तत्कालीन महाराजा के आदेश पर साप्ताहिक पत्रिका 'केसरी' के प्रकाशन पर रोक लगा दी गई तो बन्धु जी ने उर्दू भाषा में 'देश' पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया और इसे प्रगतिवादी चिन्तन, क्रान्तिकारी विचार धारा और विद्रोही लोक मानस की प्रतिनिधि पत्रिका बना दिया।

बन्धु जी युगीन राजनीतिक नेताओं के बहुत निकट रहे हैं वे सब उनका सम्मान करते थे और उन की कार्य प्रणाली से पर्याप्त संतुष्ट थे। उन्ही की प्रेरणा से बन्धु जी 'नेशनल कांफ्रेस' में शामिल हुए और कुछ समय के लिये दैनिक 'खिद्मत' का सम्पादन भी करते रहे।

बन्धु जी को अपनी जन्म भूमि के प्रति अनन्य अनुराग था उनका निम्नलिखित शे'र मेरे कथन की सच्चाई को प्रमाणित करता है। बन्धु जी ने लिखा है।–

'बुल बुल ने की बसीयत अहबाब भूल न जाये
गंगा के बदले मेरे जेहलम मे फूल जायें।'

अपनी मातृभूमि के सम्मान की रक्षा के हेतु उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा और यह कारावास काल कुल मिलाकर 10 वर्ष का रहा

है। जीवन के अन्तिम वर्षों में उन्होंने अपना सारा समय पढ़ने–लिखने में लगाया। उन्हें भारतीय संस्कृति विशेषकर वैदिककल्चर ने विशेष रूप से प्रभावित किया था। उनकी स्मरण शक्ति बहुत तेज़ थी। कहते हैं उन्होंने कश्मीर के युगीन इतिहास को भी लिखा जो आज तक अप्रकाशित है। उन्हें गो–सेवा से आनन्द मिलता था। घर में उन्होंने कई गायें रखी थीं और उनकी सेवा में लगे रहते थे।

पण्डित कश्यप बन्धु जी का देहान्त 18 दिस्मबर 1985 ई० के दिन हुआ।

इस शेर दिल कश्मीरी पण्डित जननायक का सम्मान करने के हेतु संजीवनी शारदा केन्द्र (आनन्द नगर बोडी, जम्मू) ने स्वर्गीय कश्यप बन्धु को वर्ष सन् 2000 ई० के लिये 'शारदा पुरस्कार' से सम्मानित करने का निर्णय लिया और 5 मार्च 2000 ई० के दिन महाशिवरात्रि समारोह में एक विशाल जन समूह की उपस्थिति में समारोह के मुख्य अतिथि स्वामी प्रेमानन्द जी ने स्वर्गीय कश्यप बन्धु को 'शारदा पुरस्कार' प्रदान किया जिसे उनके एक निकटस्थ रिश्तेदार ने स्वयं सभा में उपस्थित रह कर ग्रहण किया।

स्वर्गीय पण्डित केशव रामधर उर्फ लालाजी उर्फ केशव पठान उर्फ खैबरी
(सन् 1887 -1972 ई०)
"शारदा पुरस्कार 2000 ई०

20 वीं शताब्दी के कश्मीरी पण्डितों के इतिहास में दो साहसी, जुझारू, परिश्रमी, प्रतिभा सम्पन्न हमनाम पण्डितों का अभूत पूर्व योगदान रहा है। यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि ये दोनों हमनाम पण्डित इतिहास के मलबे के नीचे दबे पड़े हैं और आज के स्वार्थान्ध आतंकी युग में हम और हमारी भावी पीढ़ी इनके संकल्पबद्ध सेवाकार्य और जीवन उपलब्धियों से पूर्णतः अपरिचित हैं। जिन्हें हमारे सामाजिक जीवन में शीर्षस्थ स्थान प्राप्त होना चाहिये था वही अज्ञानवश हमारे उपेक्षा भरे व्यवहार का शिकार हो गये हैं। मैं जिन दो हमनाम कश्मीरी पण्डितों की बात कर रहा हूँ वे हैं—

(i) केशव पठान (1887-1972 ई०)

(ii) केशव भट्ट सिक्ख (1873-1949 ई०)

स्वर्गीय पण्डित केशव राम धर उपनाम केशव खैबरी/ लालाजी/ किशि खैबरी/ किशि पठान/ जानेमन तहसील व ज़िला कुपवाड़ा कश्मीर में स्थित इलाका पतीमंज़हार के हयहामा गाँव के एक प्रतिष्ठित जमींदार और सम्पन्न व्यक्ति थे। वे सन् 1887 ई० में आश्विन मास की कृष्णपक्ष पंचमी के दिन पण्डित लाल चन्द धर के घर में हयहामा में उत्पन्न हुए। जीवन बड़ा ही संघर्षमय रहा। उस ज़माने में वे अपने इलाके के एक मात्र व्यक्ति थे जिसने प्राइमरी की परीक्षा पास की थी। उर्दू फ़ारसी और अरबी तीनों भाषाओं की उन्हें सम्यक् जानकारी प्राप्त थी। वे एक अच्छे वक्ता

और लेखक भी थे।

20 वर्ष की अवस्था सन् 1907 ई० में उनका विवाह टिक्कर कुपवाड़ा निवासी पण्डित लॉखमन भट्ट की पुत्री से सम्पन्न हुआ लेकिन दुर्भाग्यवश सन् 1910 ई० में सारा इलाका कालरा (Cholera) हैज़ा की चपेट में आगया और केशवराम के परिवार के सभी सदस्य कालग्रस्त हो गये जिनमें उनके माता–पिता, दो बहनें चार चाचे एवं पत्नी शामिल थी। मुहल्ले के सभी पण्डित हयहामा छोड़कर बुमहामा चले गये और मंज़हार हयहामा में केशव अकेला रहने लगा।

सन् 1924 ई० में केशवराम ने इस्लाम धर्म क़बूल किया और हयहामा निवसीी मुहम्मद रमज़ान वानी के घर में उन का निक़ाह जॉन्य के साथ हुआ।

सन् 1932 ई० में उन्होंने हिदू धर्म पुनः ग्रहण किया और सारा परिवार केशवराम के साथ हिन्दुत्व की परिधि में आगया, उनकी पत्नी जॉन्य जानकी द्यद नाम से हिन्दू बनी और दो बेटियों ने 'शील' और 'ही' नाम से हिन्दू धर्म स्वीकार किया।

पण्डित केशव राम इलाका पती मंज़हार में पर्याप्त चर्चित और प्रभावशाली ज़मींदार थे। इन के पिता पटवारी थे और उनके पास काफी ज़मीन थी। केशव राम के अद्‌भुत साहस, कर्तव्य निष्ठा, तीव्र बुद्धि और निर्णय लेने की आपार शक्ति से इलाके के पठान केशव राम की बहुत इज़्ज़त करते थे और उन्हें प्यार से 'लाला जी' के नाम से पुकारते थे।

आम लोगों की नज़र में पण्डित केशव राम हयहामा में 'नोन तेल' की दुकान चलाते थे लेकिन उनका कर्म–क्षेत्र यहीं तक

सीमित नहीं था। देश प्रेम और राष्ट्र हित की भावना उन्हें कर्म के साथ साथ कर्तव्य निबाहने की प्रेरणा भी दे रही थी। अतः राज्य के गुप्तचर विभाग के साथ उनका सम्बन्ध स्थापित हुआ।

अगस्त सन् 1965 ई० में जब सीमा के उस पार से घुसपैंठियों का छिप छिपकर प्रवेश कश्मीर में होने लगा तो सरकारी गुप्तचर केन्द्रों को इसकी प्रथम सूचना केशव राम ने ही दी थी। भेस बदल कर पाक सैनिकों का भारत में प्रवेश—कहते हैं कि अफ्वाह फैलाने के जुर्म में कुपवाड़ा के एक सैनिक शिविर में उसे बन्धक बनाकर कुछ दिन रखा गया। लेकिन कुछ ही दिनों में जब देश की मोहनिद्रा भंग हुई तो केशव राम को ससम्मान मुक्त किया गया। केशव राम के जीवन की एक और महत्त्वपूर्ण घटना का उल्लेख करना भी यहाँ संगत होगा। सन् 1947 ई० में देश विमाजन के पश्चात जब कश्मीर पर क़बाइली आदमखोर दरिन्दों का आक्रमण हुआ तो हयहामा के पास उन्हें बन्दी बना कर वे अपने साथ ले गये और अपने कमाण्डर के सामने ज़िन्दा पेश किया। उन्हें विश्वास था कि उनका सरदार इस तथाकथित सिर फिरे क़ाफिर को देखकर खुश हो जायेगा और इसे खत्म करने के आदेश के साथ ही उन्हें इनाम से भी नवाजेगा। कबाइली कमांडर ने केशव को देखते ही पहचान लिया और उसके मुँह से बेतहाशा (सहसा) निकल पड़ा – जानेमन (मेरी जान)। दोनों गले मिले, आँखें नम होगई और कमांडर ने दोस्ती के सम्बन्ध को निबाहते हुए आदेश दिया कि केशव राम को पूरी सुरक्षा के साथ उनके घर पहुँचाया जाये और भविष्य में भी उनकी सुरक्षा का ख़याल (ध्यान) रखा जाये।

सन् 1947 ई० के बाद केशव राम के कई मित्र पाक

अधिकृत कश्मीर में चले गये। वे केशव राम को बहुत चाहते थे और सम्मान भी करते थे। सीमा के उस पार से जो पत्र उसके नाम पर आते थे उनके लिफ़ाफों पर साफ़ लिखा होता– 'यह ख़त कुपवाड़ा कश्मीर पहुँचकर किश पठान को मिले।

इलाके के खान और पठान उन्हें अपना जानेमन समझ कर हर प्रकार की सुविधा प्रदान करते थे। उनके लिये वे लाला जी' थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् केशव राम सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थओं के साथ प्रमुख रूप से जुड़ गये। सन् 1956 ई० में केशव राम युवक धर्म–सभा शाखा टिक्कर– कुपवाड़ा के सूचना एवं प्रचार मंत्री बने। धीरे–धीरे वे उस युग के प्रसिद्ध समाज सुधारक एवं जाति–नेता कश्यप बन्धु के सम्पर्क में आये।

पण्डित केशवराम साफ–गो और सच्चे आदमी थे। वे एक न्याय प्रिय जीव थे यही कारण है कि इलाके के पठान उस पर विश्वास करते थे और अपनी समस्याओं के समाधान के हेतु उसके पास आते थे। वह उनके छोटे मोटे पारिवारिक अथवा सामजिक झगड़े सुलझादेता और उनके निर्णय सभी सर झुका कर स्वीकार करते थे।

हयहामा में हज़ारों हज़ारों पठानों के बीच उनका मात्र एक कश्मीरी पण्डित परिवार था। इस एक परिवार के लिये उन्होंने गाँव में मन्दिर का निर्माण किया तथा शमशान घाट भी बनवाया।

पण्डित केशवराम धर अत्यन्त अनुभवी व्यवहार कुशल साहसी एवं कर्मनिष्ठ जाति बन्धु थे। देश विभाजन के बाद केशव राम सुखी नहीं रहा। उनके अधिकांश चाहने वाले और मित्र सीमा के उस पार रहने के लिये चले गये थे। जीवन नीरस होकर दिशाहीन

पथ पर आगे बढ़ने के लिये विवश था यह एहसास उसके मानस में गहराने लगा। उसने समाज सेवा का संकल्प लिया। अपमानित और क्षतिग्रस्त समाज का मनोबल ऊपर उठाने के लिये सेवाकार्य में जुट गये।

20 सितम्बर सन् 1972 ई० भाद्रपद कृष्ण पक्ष त्रयोदशी प्रातः 6 बज कर तीस मिनट पर केशव राम का निधन अपने निवास पर हयहामा में हुआ।

इलाके के सारे पठान और हिन्दू एकत्र हुए और वैदिक रीति से उनका अन्तिम संस्कार किया गया। सन् 1975 ई० पौष शुक्ल पक्ष चतुर्थी को उनकी पत्नी श्रीमती जानकी द्यद का निधन हयहामा गाँव में उनके निवास पर हुआ। गाँव में ही वैदिक रीति से उनका दाह संस्कार किया गया।

5 मार्च 2000 ई० में महा शिवरात्रि समारोह पर एक विशाल जनसभा में संजीवनी शारदा केन्द्र आनन्दनगर बोडी, जम्मू ने मरणोपरान्त स्वर्गीय केशव राम धर को 'शारदा पुरस्कार' से सम्मानित किया। यह पुरस्कार उनकी सुपुत्री श्रीमती शील ने सभा के मुख्यअतिथि स्वामी प्रेमानन्द जी से ग्रहण किया।

शहीद पण्डित टीका लाल टॅपलू
(लाला जी)
(सन् 1930 ई० -1989 ई०)
''शारदा पुरस्कार 2001 ई०

20 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में स्वर्गीय टीका लाल टॅपलू का नाम प्रदेश के राजनेताओं और सामाजिक कार्य कर्ताओं की सूची में अग्रगण्य (Leading) है। एक महान देश भक्त, संकल्पबद्ध राष्ट्र हितैषी, राजनीतिक योद्धा, एक सफल अधिवक्ता (Advocate) और ग़रीबों का शुभचिन्तक उत्साही जन प्रतिनिधि अकस्मात् मौन हो गये।

लाला जी का जन्म 10 मार्च सन् 1930 ई० के दिन हुआ। सन् 1945 ई० में पंजाब विश्वविद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा पास करने के बाद आगे पढ़ाई जारी रखकर बी.ए की परीक्षा पास की और सन् 1957 ई० में अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय से एम.ए, एल. एल. बी. की परीक्षा पास की। लौट कर श्रीनगर में वकालत शुरू की। टीका लाल जी अपने पेशे के प्रति ईमानदार थे। आरम्भ से ही राजनीति में रुचि लेते रहे और एक राष्ट्रीय दल के साथ जुड़ गये। पढ़ाई के दिनों में अलीगढ़ में ही राजनीतिक चिन्तन के प्रति जागरूकता बढ़ने लगी और वहाँ से लौट कर भारतीय 'जन संघ' में शामिल हुए। श्रीनगर में रहकर 'जनसंघ' का काम करना ख़तरे से खाली नहीं था। टॅपलू जी ने एक युवा कार्यकर्ता के रूप में सराहनीय काम किया। तत्पश्चात वे भारतीय जनता पार्टी' के साथ जुड़ गये और अन्तिम समय तक बी. जे.पी के एक प्रभावशाली कार्यकर्ता के रूप में साक्रिय रहे। सन् 1986 ई० में वे राज्य बी. जे.पी के उपप्रधान बने।

पण्डित टीका लाल टॅपलू राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक योग्य स्वयंसेवक एवं कुशल कार्यकर्त्ता थे। 45 बर्षों तक वे इस संस्था के साथ जुड़े रहे और उन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की गतिविधियाँ चलाने के हेतु सोलहबार नज़रबन्द किया गया।

पण्डित टीका लाल टॅपलू को हिन्दुत्व पर गर्व था और गर्व था अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं पर। अल्पसंख्यक पण्डित समुदाय के हितों की रक्षा हेतु वे आजीवन संघर्षरत रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रश्चात् कश्मीर में अल्पसंख्यकों को क़दम क़दम पर संघर्ष करना पड़ा और टीकालाल जी ने राजनीतिक सूझबूझ के साथ इस संघर्ष का नेतृत्व किया।

सन् 1958 ई० में लाला जी का विवाह सरला जी के साथ हुआ। पारिवारिक जीवन सुखद और सम्पन्न था। घाटी के बहुसंख्यक मुसलमानों के साथ भी लाला जी के सम्बन्ध सौहार्द पूर्ण एवं मधुर थे। वे अपने मुहल्ले के लोगों से चाहे वे किसी भी जाति या वर्ग के साथ सम्बन्धित क्यों न हो, कोई फीस नहीं लेते थे। बिना पारिश्रमिक लिये वे उनके केसों की सुनवाई में उपस्थित होकर उनके पक्ष में बहस करते थे और उनके हितों की रक्षा के लिये हर सम्भव प्रयास करते रहते थे।

सन् 1967 ई० में 'परमेश्वरी जन–आन्दोलन' के समय टीकालालजीने अदभुत साहस का परिचय देते हुए अल्पसंख्यक पण्डितों की ज्वलंत समस्याओं को राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। सवाल उनके अस्तित्व रक्षा काथा, यह केवल परमेश्वरी का सवाल नहीं था बल्कि पाँच लाख अल्पसंख्यकों के जातीय सम्मान का सवाल था। उनके नागरिक अधिकारों का सवाल था, राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता का सवाल था। लाला जी

कई बार जन प्रतिनिधि के रूप में चुनाव में भी खड़े हुए लेकिन यह मात्र उनकी सांकेतिक उपस्थिति थी।

लाला जी घाटी में सामाजिक कार्यक्रमों में भी बढ़ चढ़ कर भाग लेते थे और श्रीमद्भगवद् गीता के कर्तव्य कर्म सिद्धान्त से प्रेरित होकर अल्पसंख्यक युवा मानस में कर्म पथ पर अग्रसर होने के लिये प्रेरित करते थे। प्रायः भगवद्– गीता के द्वितीय अध्याय से 37 वाँ शलोक पढ़कर जन मानस को झिंझोड़ देते थे–

'हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्ग
जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुतिष्ठ कौन्तेय
युद्धाय कृत निश्चयः ।। 2/37

यही उनकी साधना का सार था और कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ने के हेतु सिद्धि का प्रज्वलित ज्ञान दीप। 14 सितम्बर सन् 1989 ई० के दिन लाला जी आतंक के शिकार हो गये। उनकी निर्मम हत्या उन्हीं के घर के निकट एक पूर्वरचित षड़यंत्रीय योजना के अंतर्गत की गई। उनका वक्ष गोलियों से छलनी हुआ। और माँ शारदा का लाड़ला सपूत चिरनिद्रा में निमग्न हुआ। चेहरे पर कोई शिकन नहीं। अपनी ऊष्ण रक्त की धार से धरती के वक्षस्थल को नहला कर उन्होंने माँ के दूध की कीमत चुका दी। यह मृत्यु भी स्वर्गिक है, अनुपम और अदभुत। देश का लाड़ला देश के लिये, देशवासियों के लिये हिन्दुत्व के लिए और सबसे बडकर राष्ट्र सम्मान के लिए शहीद हुआ। यही वह दिन था जब घाटी में प्रत्येक अल्पसंख्यक के कानों में खतरे की घण्टियाँ बजने लगी और लोगों ने देश त्याग करना शुरू किया।

लाला जी का सम्पूर्ण जीवन देशवासियों के लिये, विशेषकर

पीड़ित, दरिद्र एवं असहाय जन के लिये समर्पित था। वे अपनी ध ार्मिक आस्थाओं एवं मान्यताओं के अनुकूल जीवन जीने में विश्वास रखते थे। अपने व्यक्तिगत हितों की चिन्ता न करते हुए उन्होंने सम्पूर्ण राष्ट्र के उत्थान के हेतु अपना सब कुछ निछावर किया था।

26 अगस्त 2001 ई० के दिन 'शारदाष्टमी समारोह' में 'संजीवनी शारदा केन्द्र' आनन्दनगर बोड़ी जम्मू ने सरस्वती के वरद हस्त पुत्र, कुशल राजनेता, प्रभावी वक्ता, अनन्य देशभक्त और सब से बढ़ कर एक ज़िन्दा दिल इंन्सान पण्डित टीका लाल टॅपलू को मरणोपरान्त 'शारदा पुरस्कार' से सम्मानित किया। स्वर्गीय टीका लाल टॅपलू की पुत्री श्रीमती कविता जी ने एक विशल जन सभा में मुख्य अतिथि श्री इन्द्रेश कुमार जी के हाथों यह पुरस्कार ग्रहण किया।

ज्योतिषी पण्डित प्रेमनाथ शास्त्री
(4 अक्तूबर 1920 -28 अगस्त 1999 ई०)
''शारदा पुरस्कार 2001 ई०

कश्मीर के इतिहास प्रसिद्ध विद्या केन्द्र बिजबिहाड़ा (विजयेश्वर) में ज्योतिषी पण्डित अफ़ताब रामशर्मा के घर स्वर्गीय पण्डित प्रेमनाथ शास्त्री का जन्म 4 अक्तूबर 1920 ई० तदनुसार 19 असूज 1977 विक्रमी को हुआ। इनकी माता श्रीमती राधा माली ने दो पुत्र रत्नों को जन्म दिया–पण्डित काशी नाथ एवं पण्डित प्रेम नाथ। दोनों भाइयों पर देवी माँ की विशेष कृपा थी। दोनों माँ सरस्वती के वरदहस्त पुत्र थे और दोनों की जिह्वा पर माँ शारदा का वास था। एक ज्योतिषी काशी नाथ जी महा पण्डित होने के साथ साथ कर्म–कांड–ज्ञात सिद्ध महा पुरूष थे और दूसरे ज्योतिषी प्रेमनाथ शास्त्री शास्त्र ज्ञाता, अनुभवी लेखक' वक्ता एवं व्याख्या कार थे।

22 वर्ष की अवस्था में गाँव बोनगुंड (वेरीनाग–कश्मीर) में पण्डित गोविन्द राम शर्मा की सुपुत्री तुलसी जी/गुणवती के साथ प्रेमनाथ का विवाह सम्पन्न हुआ। गहनशास्त्र ज्ञान और अदभुत प्रतिभा के बल पर शास्त्री जी ने जन मानस को मोह लिया था– इसमें कोई सन्देह नहीं है।

धर्म, दर्शन एवं संस्कार बोध कराने में उनका अभूतपूर्व योगदान रहा है। विविध धार्मिक पुस्तकों का प्रकाशन, कर्मकांड व्याख्या, ऑडियो कैस्टों का निर्माण तथा अन्य अनेक जनहित कार्यों ने शास्त्री जी के संकल्प प्रधान क्रियाशील तथा त्यागबलिदान मय जीवन को आदर्श रूप प्रदान किया है।

मार्ग दर्शक के रूप में वार्षिक विजयेश्वर पंचांग का प्रकाशन

वस्तुतः उनके दृढ़ संकल्पी होने का ज्वलंत प्रमाण है। अपने सुमधुर कंठ से वेद मंत्रों का पाठ, उपनिबद् और ब्राह्मण ग्रन्थों का, महाभारत और रामायण का तथा श्रीमद् भगवद् गीता का पाठ करते जिन्होंने शास्त्री जी को सुना है उनके मानस में आज भी उनकी अमृतवाणी गूँज रही होगी।

शास्त्री जी अद्भुत वक्ता थे। कई बार 'संजीवनी शारदा केन्द्र' के शिवरात्रि महोत्सव में शास्त्री जी ने मुख्य वक्ता के रूप में सभा को सुशोभित किया है। अपनी ज्ञान गरिमा वाक् पटुता, दृष्टान्त देने की क्षमता, तर्क प्रस्तुत करने की योग्यता और सबसे बड़कर मुख मंडल की मृदु–मधु मुसकान से वे श्रोतः गण को मोहित करते थे।

शास्त्री जी एक उद्धार हृदयी महा पुरुष थे। अपनी सांस्कृतिक विरासत पर उन्हें गर्व था और गर्व था हिन्दुत्व पर। कश्मीर की विश्वविख्यात सांस्कृतिक विरास्त ने उन्हें जीवन में कुछ करने के लिये प्रेरित किया। उन्हें परम्परा से मोह था और रूढ़ि से घृणा। शास्त्री जी एक सिद्ध हस्त ज्योतिषी थे–ज्योतिष विद्या में कुशल और प्रवीण। ज्योतिष गणना के आधार पर की गई उनकी कई भविष्य वाणियाँ बिल्कुल सही साबित हुई हैं।

आज जब कि वे भौतिक रूप में हमारे मध्य नहीं हैं उनकी तेजभयी मुख मुद्रा के अनेक छविचित्र हमारे मानस के स्क्रीन पर रह रह कर चमक उठते हैं। इस शाकाहारी महा पण्डित ने 20 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हिन्दुत्व का भगवा ध्वज फहराते हुए वितस्ता के प्रति आस्थावान हिन्दुओं का धार्मिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में निरन्तर पथ प्रदर्शन किया। शास्त्री जी भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी पर्याप्त चर्चित रहे हैं। मेरे एक

अमेरिका वासी बन्धु का कहना है कि अमेरिका में अधिकांश हिन्दु परिवारों के निवास स्थानों पर शास्त्री जी के पंचागं, ऑडियो कैसट तथा कर्मकांड से सम्बन्धित पुस्तकें देखने को मिलती हैं। शास्त्री जी ने श्रीमद्‌भगवद् गीता की कश्मीरी भाषा में विस्तृत व्याख्या की है। गीता जी के 700 श्लोकों की सार गर्भित व्याख्या 11 ऑडयो कैसटों में रिकार्ड कराई है। इसी प्रकार 14 वीं शताब्दी की प्रसिद्ध कवयित्री एवं योगसाधिका लल्लेश्वरी के लल वाखों की भारतीय चिन्तन के आधार पर व्याख्या 7 कैसटों में रिकार्ड कराई है। इसी प्रकार पुष्पदंत कृत 'शिवमहिम्नस्तोत्रम्' एवं धर्माचार्य कृत 'पंचस्तवीं की शास्त्रीय व्याख्या भी शास्त्री जी ने की है।

शास्त्री जी कई भाषाओं के ज्ञाता थे। संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी के साथ साथ उन्हें उर्दू भाषा की भी सम्यक जानकारी थी। वे प्रायः दैनिक जीवन में उर्दू भाषा का व्यवहार करते थे। देवनागरी रोमन और फ़ारसी लिपियों के साथ–साथ उन्हें शारदा लिपि की भी पूर्ण जानकारी थी। इस लिपि के प्रचार हेतु वे अन्तिम समय तक भरसक प्रयत्नशील रहे।

शास्त्री जी सम्पूर्ण घाटी में अपने मधुर कंठ के लिये चर्चित थे। कंठ–माधुर्य का यह प्रवाह विरलेजनों में ही देखने को मिलता है। जहाँ भी वे कोई धार्मिक अनुष्ठान अथवा यज्ञ कराते थे तो दिशाएँ उनके अदभुत कंठ नाद से गूँज उठती और भक्त जन हज़ारों की संख्या में खिंचते चले आते थे।

शास्त्री जी अनुशासन बद्ध जीवन जीने में विश्वास रखते थे। परिवार में सभी सदस्य उनके सम्मुख मौन हो जाते और आदेश का पालन सर झुका कर करते। विरोध करने का सवाल ही पैदा नहीं होता था। 28 अगस्त 1999 ई० के दिन ज्योतिषी प्रेमनाथ

शास्त्री स्वर्ग सिधारे।

डॉ० बदरीनाथ कल्ला के शब्दों में–

अनेक शास्त्र निष्णातो बहुभाव विशारदः।
कुङ्कुम देश सुपुत्र अकाले त्रिदिवं गतः।।

सन 2001 ई० में 'संजीवनी शारदा केन्द्र' आनन्द नगर बोड़ी–जम्मू ने मरणोपरान्त स्वर्गीय प्रेमनाथ शास्त्री को 'शारदा पुरस्कार' से सम्मानित किया। 26 अगस्त 2001 ई० को आयोजित एक भव्यसमारोह में शास्त्री जी के योग्य ज्येष्ठ पुत्र पण्डित ओमकार नाथ शास्त्री ने समारोह के मुख्य अतिथि माननीय इन्द्रेश कुमार जी से यह पुरस्कार ग्रहण किया। शास्त्री जी को सम्मानित करते हुए वस्तुतः हम ने अपने कर्तव्य कर्म अर्थात् धर्म का निर्वाह किया। हमें पूर्ण विश्वास है कि ज्योतिषी जी के योग्यपुत्र न केवल अपनी सम्पन्न परम्परा को आगे बढ़ायेंगे अपितु उस में श्री वृद्धि भी करेंगे।

अमर शहीद स्वर्गीय प्रेम नाथ भट्ट
(5 दिसम्बर 1932-27 दिसम्बर 1989)
(मरणोपरान्त शारदा पुरस्कार वर्ष 2002 ई०)

हिन्दुत्व की मानमर्यादा का सम्मान करने वाले कर्म योगी, राष्ट्र ध्वज वाहक, कश्मीरियत के प्रति समर्पित कश्मीरी पण्डित, निर्दिष्ट लक्ष्य, चिन्तन और नैतिक मान्यताओं के प्रति समर्पित समाज सेवी, शोषित, पीड़ित, अधिकार वंचित जाति बन्धुओं के मसीहा, चुनौतियों को स्वीकार करने वाले दृढ़ संकल्पी, नीतिज्ञ (Strategist), कश्मीर के एक प्रसिद्ध एवं चर्चित अधिवक्ता (Advocate), अनन्त नाग वासियों के हृदयहार शहीद पण्डित प्रेम नाथ भट्ट का जन्म एक मध्य वर्गीय कश्मीरी पण्डित परिवार में श्री लक्ष्मण भट्ट के घर 5 दिसम्बर सन् 1932 ई० के दिन अनन्तनाग में माता श्रीमती जानकी माली के कोख से हुआ।

अमर सिंह कॉलेज श्रीनगर से सन् 1951 ई० में बी.ए. पास करने के बाद उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से सन् 1953 ई० में एम. ए. और तत्पश्चात् एल. एल. बी की परीक्षाएँ पास की तथा वहाँ से लौट कर तुरन्त अनन्तनाग बार (विधिज्ञवर्ग) में प्रवेश किया। जीवन की अन्तिम संध्या तक वे इसके साथ जुड़े रहे।

अपने जीवन के उषा काल में ही प्रेमनाथ भट्ट राष्ट्रीय स्वयं–सेवक संघ की आत्मोत्सर्ग प्रधान विचारधारा से प्रेरित और प्रभवित होकर 'भारत बचाओ'– भारतीय राष्ट्रवाद के प्रति राष्ट्र सेवक के रूप में संकल्प बद्ध हुए। उसी कालावधि में श्री अरविंद घोष, स्वामी राम तीर्थ तथा स्वामी विवेकानन्द की चिन्तनप्रधान तर्काश्रित विचार धारा ने भी उन्हें मोह लिया था।

कई बर्षों तक भट्ट साहब गहन अध्ययन में लीन रहे। अधिवक्ता के रूप में वे अपनी योग्यता एवं कठिन परिश्रम के कारण

जनाकर्षण का केन्द्र बन गये। धीरे–धीरे अपनी असाधारण योग्यता, कर्तव्य निष्ठा, देश प्रेमकी भावना, सांस्कृतिक जागरूकता, ऐतिहासिक चेतना और कुछ कर दिखाने की बलवती इच्छा ने प्रेमनाथ को जन नेता के रूप में दायित्व निर्वाह के हेतु प्रेरित किया और जीवन के अन्तिम क्षण तक वे झण्डा लिये बहादुर सिपाही के रूप में केवल आगे ही बढ़ते रहे। वीर सिपाही परमात्मा से सविनय प्रार्थना करता है कि कर्म संघर्ष में शत्रु का वार सहते हुए उसका बक्ष छलनी हो, पीठ नहीं।

वक़ालत के पेशे में वे सम्पूर्ण घाटी में एक चतुर, पठित, जानकार, योग्य, तर्क देने में माहिर और विरोधी पक्ष को पछाड़ने में समर्थ वकील के रूप में प्रसिद्ध हुए। स्वर्गीय प्रेमनाथ भट्ट को एक योग्य अधिवक्ता बनाने में अनन्तनाग के एक और नामवर वकील स्वर्गीय दम लाल भट्ट का यौगदान सर्वोपरि रहा है। उन्होंने इस धूलभरे हीरे को इस तरह से पोंछा कि आज शहादत के बाद भी वे एक प्रकाश्स्तम्भ के समान हमें भविष्य–निर्णय के प्रति सचेत और सावधान करते हुए दिखाई देते हैं।

पण्डित प्रेमनाथ भट्ट राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के एक कर्तव्य निष्ठ सिपाही होने के साथ–साथ प्रत्येक कश्मीर वासी के हितैषी, उद्धारक और शुभेच्छुक थे। यही उनकी महानता थी। चुपचाप किसी को कानों कान ख़बर किये बिना गरीबों की मदद करना, विधवा नारियों तक आर्थिक सहायता पहुँचाना, कन्याओं के विवाह की व्यवस्था करना, बेहद गरीब लोगों से बिना पैसे लिये उनके हेतु मुकद्दमें लड़ना और समाज सेवा के कार्यक्रमों में सहयोग प्रदान करना कोई उनसे सीखे। कर्तव्य निष्ठ कर्मयोगी के साथ–साथ वे एक आदर्श समाज सेवक भी थे।

पण्डित प्रेमनाथ भट्ट एक सफल वक्ता और लेखक के रूप में भी रव्याति प्राप्त थे। देश के विभिन्न समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में उनकी रचनाएँ प्रकाशित होती थीं और वे निर्भय होकर पूरी

निष्ठा और साहस के साथ विपक्षियों को खरी खरी सुनाते थे।

सन् 1989 ई० के अन्तिम तीन महीनों में जब उग्रवाद घाटी में अचानक भड़क उठा तो प्रेम नाथ भट्ट साहब एक बार फिर भारत राष्ट्र, मातृभूमि तथा अपने जाति बन्धुओं की सुरक्षा के हेतु सक्रिय हो उठे। उन्होंने शायद यह कभी नहीं सोचा था कि एक बुद्धिजीवी, राष्ट्र एवं समाज सेवी, दरिद्र जन हितैषी, 'सत्यं एव जयते' का जयघोष करने वाला तिलक धारी पण्डित प्रेमनाथ की निर्मम हत्या होगी। लेकिन ऐसा ही हुआ। 27 दिसम्बर सन् 1989 ई० सेशन कोर्ट अनन्तनाग में अपना एक केस पेश करने के बाद वे घर वापस आ रहे थे कि एक नवयुवक ने उन्हें गोली मार कर सदा के लिये खामोश कर दिया। उस दिन हर एक होशमंद कश्मीरी तड़प उठा। उस समय भी प्रेमनाथ के सुन्न (Stilled) चेहरे पर मुसकान खिल रही थी मानो जाते-जाते हम से कह रहे थे कि:-

'हम चले छोड़के यारो अहले वतन जो
हिम्मत है तो मेरी याद को छलनी कर दो।'

पण्डित प्रेमनाथ भट्ट की राष्ट्रीय चेतना, देशहित की भावना, कर्तव्य निष्ठा, निर्भीक अभिव्यक्ति और आत्मोत्सर्ग के संकल्प को प्रणाम करते हुए 'संजीवनी शारदा केन्द्र' (आनदनगर बोड़ी-जम्मू) ने वर्ष 2002 ई० के लिये शहीद प्रेमनाथ भट्ट को शारदा पुरस्कार से सम्मानित करने का निर्णय लिया।

14 सितम्बर सन् 2002 के दिन शारदा अष्टमी समारोह पर शहीद प्रेमनाथ भट्ट के सुपत्र जम्मू-कश्मीर प्रांत के जाने माने अधिवक्ता और समाज सेवी श्री कश्मीरी लाल भट्ट ने जन सभा के मुख्य आतिथि स्वामी चिन्मयानन्द जी से 'शारदा पुरस्कार 2002 ई० ग्रहण किया।

प्रोफ़ेसर (डॉ०) बलजिन्नाथ पण्डित
(सन् 1916 ई० - 2007 ई०)
(शारदा पुरस्कार सन् 2002 ई०)

कश्मीर घाटी के नामवर बुद्धि जीवियों में शैवशास्त्र विशेषज्ञ प्रोफ़ेसर (डॉ०) बलजिन्नाथ पण्डित शीर्ष स्थान के अधिकारी हैं। डॉ० साहब कुलगाम ज़िला के मूल निवासी हैं और यहीं उनका जन्म एक प्रतिष्ठित कश्मीरी पण्डित परिवार में सन् 1916 के फरवरी मास में हुआ। इनके पिता जी स्वर्गीय पण्डित आफताब राम तथा माता श्रीमती अमरावती के दाम्पत्य जीवन में पुत्र जन्म माँ शारदा का अद्‌भुत वरदान सिद्ध हुआ। डा० साहब हमारी सांस्कृतिक विभूति के प्रखर प्रकाशस्तम्भ हैं। शास्त्री की परीक्षा पास करने के बाद एम. ए. संस्कृत और तत्पश्चात् पीएच. डी की डिग्री से विभूषित डॉ० बलजिन्नाथ पण्डित जम्मू कश्मीर राजकीय शिक्षा सेवा में शामिल हुए और विभिन्न कालेजों में वर्षों संस्कृत भाषा और साहित्य पढ़ाते रहे। प्रदेश की राजकीय सेवा से सेवा निवृत्त होनें के पश्चात् शिमला स्थित हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग में रीडर नियुक्त हुए और दस बर्षों तक स्नातकोत्तर स्तर पर अध्ययन–अध्यापन एवं शोध निर्देशन में लगे रहे। यह दस वर्ष की समय अवधि डॉ साहब के शैक्षणिक जीवन में पर्याप्त महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। डॉ० साहब की प्रकाशित पुस्तकों में निम्नलिखित रचनाएँ विशेष उल्लेखनीय हैं–

1. श्री आत्म विलास : (विमर्शिनी सहित)
2. श्री राष्ट्र लोक:
3. श्री सिद्ध महा रहस्यम्
4. श्री गुरुवर स्तव :

5. Specific Principles of Kashmir Shaivism

6. Aspects of Kashmir Shaivism

इन रचनाओं के अतिरिक्त मैं यहाँ एक और विशेष रचना की ओर आप महानुभावों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। डॉ० साहब ने प्रकाश राम कुरिगामी (1819 ई०–1985 ई०) कृत 'राम अवतार चरित' (प्रकाश रामायण) का पाठालोचन (Textual criticism) के सिद्धान्तों के आधार पर सम्पादन किया और यह रचना नस्तालीक लिपि में जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी के द्वारा सन् 1965 ई० मे प्रकाशित हुई। दुर्भाग्य यह है कि आज यह रचना कहीं उपलब्ध नहीं है और राज्य की कल्चरल अकादमी इसके पुनः प्रकाशन की ओर कोई ध्यान नहीं देती।

केन्द्रीय विद्यापीठ की ओर से डॉ० साहब को एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण काम सौंपा गया। 'शैव दर्शन बृहत्कोष' (Encyclopedia of Kashmir Shaivism) तैयार करने के हेतु उनका चयन हुआ। इस प्रोजेक्ट (परियोजना) को लेकर कई वर्ष वे शोध कार्य में लगे रहे। उन्होंने सफलता पूर्वक काम पूरा किया लेकिन विद्यापीठ किन्हीं कारणों से इसके प्रकाशन की व्यवस्था न कर सका।

डॉ० साहब कश्मीर शैवदर्शन के महा पण्डित माने जाते हैं। उन्हें बड़ी गहरी नज़र थी कश्मीर शैव शास्त्र के सिद्धांतों पर। जम्मू–कश्मीर तथा भारत की कई पत्र पत्रिकाओं में डॉ० साहब के शोध निबन्ध कई भाषाओं में प्रकाशित हुये हैं। इन निबन्धों की संख्या एक सौ के आस पास है। डॉ० साहब का 'कोशुर समाचार नई दिल्ली फरवरी 1999 ई० में प्रकाशित 'मिर्ज़ाकाक' शीर्षक लेख शोध की दृष्टि से पर्याप्त महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

अचकन पहने पगा धारी कश्मीरी पण्डित डॉ० बलजिन्नाथ अपनी सौम्य प्रकृति एवं शीतल स्वभाव के कारण सब को मोह लेते

थे। इसमें सन्देह नहीं कि उनका अध्ययन गहन एवं गम्भीर था। लेकिन निष्कपट और निर्वैर व्यवहार के कारण सभी शिक्षक एवं पाठक उनका सम्मान करते थे यहाँ तक कि उनके घोर विरोधी भी उनकी विद्वत्ता के सम्मुख शीर्ष नवाते थे डॉ० साहब संस्कृत व्याकरण के महा पण्डित थे। अल्पभाषी होनें के साथ–साथ मधुभाषी भी थे। कश्मीर के सांस्कृतिक इतिहास के मर्मज्ञ विद्वान होनें के साथ साथ वे यहाँ की आध्यात्मिक उपलब्धियों एवं संत परम्परा के प्रति भी सचेत थे। उन्हें दृढ़ विश्वास था कि कश्मीरी भाषा का मूल स्रोत तो वैदिक संस्कृत ही है। डॉ० साहब ने समय समय पर समाज की कई संस्थाओं के साथ जुड़कर हमारा मार्ग दर्शन किया है। वर्षों आप 'शहीद प्रेम नाथ भट्ट म्यॅमोरियल ट्रस्ट' के अधयक्ष रहे। सभा गोष्ठियों में स्वयं मैंने उनको गम्भीर विषयों पर बोलते सुना है।

हिन्दुत्व के महिमामय अतीत पर, वैभवशाली सांस्कृतिक इतिहास पर एवं लोक मानस की सर्जनात्मक प्रतिभा पर आपका परिपक्व चिन्तन सदा नवीन सम्भावनाओं की तलाश में लगा रहता।

आप के प्रतिभाशाली व्यक्तित्व को ध्यान में रखते हुए तथा आप की गौरव शाली उपलब्धियों का सम्मान करते हुए संजीवनी शारदा केन्द्र' (आन्दनगर बोड़ी जम्मू) ने वर्ष 2002 ई० के लिये आप को 'शारदा पुरस्कार' से सम्मानित करने का निर्णय लिया। 14 सितम्बर 2002 ई० के दिन शारदा अष्टमी के भव्य समारोह में एक विशाल जन समुदाय के सम्मुख सभा के मुख्य आतिथि स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज ने प्रोफ़ेसर बलजिन्नाथ पण्डित को शारदा सम्मान से विभूषित किया। डॉ० साहब स्वयं सभा में उपस्थित थे। आप 2002 ई० तक शारदा पुरस्कार से पुरस्कृत आदरणीय बन्धुओं में प्रथम जीवित विभूति हैं। आप का स्वंगवास 7 सितम्बर 2007 ई० के दिन 91 वर्ष की अवस्था में हुआ।

पण्डित त्रिलोकी नाथ तिक्कू
(1923 ई०)
शारदा पुरस्कार सन् 2003 ई०

पण्डित त्रिलोकी नाथ तिक्कू उत्तरी कश्मीर के ज़िला बारामूला के सोपुर कस्बे में 25 जुलाई सन् 1923 ई० में जन्मे हैं। गृहस्थ परिवार में आठ सदस्य थे। तीन भाई तथा तीन बहनें एवं माता पिता। सोपुर के सरकारी प्राइमरी स्कूल मे छ वर्ष की अवस्था में प्रवेश पाकर त्रिलोकी नाथ की प्रारम्भिक शिक्षा आरम्भ हुई और तत्पश्चात् सरकारी हाई स्कूल सोपुर में कई वर्ष शिक्षा ग्रहण कर सन् 1940 ई० में पंजाब विश्वाविद्यालय लाहौर से प्रथमश्रेणी में मैट्रिक की परीक्षा पास की। उन दिनों ज़िला बारामूला में कोई कॉलेज नहीं था अतः श्रीनगर आकर एस.पी.कालेज में इंटरमिडेट कोर्स के प्रथम वर्ष में दाखिला लिया। लेकिन पिता जो उन दिनों सोपुर के जाने माने आवेदन पत्र लेखक (अर्ज़ीनवीस) थे, का अकस्मात् देहान्त हुआ और पारिवारिक उत्तरदायित्व को निबाहने के हेतु बीच में ही पढ़ाई छोड़ कर सरकारी नौकरी करने लगे। त्रिलोकी नाथ की नियुक्ति त्रह गाम ज़िला कुपवाड़ा के प्राइमरी स्कूल में 15 रूपये मासिक वेतन पर अध्यापक के रूप में हुई। घर से 40 किलोमीटर दूर रह कर इस नवयुवक अध्यापक ने अध्यापन के साथ–साथ अपना अध्ययन भी जारी रखा और अगले दस वर्षों में आप ने स्नातक, स्नातकोत्तर तथा बी.टी (बी.एड) की डिग्री भी प्राप्त की और तब शुरु हुआ आपका सत्ताधारियों के साथ न्याय प्राप्ति के हेतु संघर्ष। सत्ताधारियों द्वारा कश्मीरी–पण्डित–विरोधी नीतियों के विरूद्ध (विशेष कर नियुक्तियों एवं राजपत्रित पदोन्नतियों के स्तर पर) उपेक्षित कश्मीरी पण्डित अध्यापक वर्ग का नेतृत्व

करते हुए देश के उच्चतम न्यायालय में याचिका दर्ज करवाई और न्याय प्राप्ति के हेतु संघर्षरत रहे। यह बड़ा साहस का काम था। सत्ताशाही के विरुद्ध खड़ा होना और क्षुद्रस्वार्थों को तिलांजलि देकर समष्टि के हेतु अपने व्यक्तिगत स्वार्थों की आहुति चढ़ाना निष्ठावान संकल्प बद्ध पुरुषों के बस की ही बात होती है। मुकद्दमा कई वर्षों तक चला और तिक्कू साहब कश्मीरी पण्डित अध्यापक वर्ग की ओर से प्रमुख वादी बन कर न्याय के दरबार में दुहाई देते रहे। आखिर एक दिन अन्याय का दमन हुआ 'सत्यं एव जयतें' का महामंत्र अक्षरशः सत्य प्रमाणित हुआ और कश्मीरी पण्डित अध्यापक वर्ग के जीवन में उच्चतम न्यायालय के आदेश से आशकी एक नवीन किरण फूट पड़ी। यचिका स्वीकृत हुई और सत्ताधारियों को अपनी न्याय विरुद्ध नीतियों पर लज्जित होना पड़ा। जीत केवल पण्डित त्रिलोकी नाथ तिक्कू की नहीं थी जीत सत्य की थी और एक उपेक्षित अल्पसंख्यक अध्यापक वर्ग की थी।

एक महान देश भक्त, जाति हितैषी, अन्याय के विरुद्ध साहस के साथ लड़ने वाले स्थिरचित्त योद्धा, एक योग्य अध्यापक हिन्दुत्व विरोधी शक्तियों के विरुद्ध वर्षों संघर्षरत रहने वाले पण्डित, उच्चतम न्यायालय में जाति हित के लिये मुक़द्दमा लड़ने वाले साहसी स्थिरचित्त अध्यापक ने अपनी कर्तव्य निष्ठा से सब को मोहित कर लिया है। आज हम सब उनकी अपार सहन शक्ति, व्यवहार कुशलता और न्यायप्रिय तर्कशक्ति से गद् गद् हो रहे हैं।

'जम्मू–कश्मीर–लद्दाख' टीचर्स फयडरेशन (अध्यापक संघ) के आप वर्षों सक्रिंय कार्यकर्ता रहे हैं। किसी पर या पदवी के लोभ में न आकर आपने लोक कल्याण की भावना को प्राथमिकता दी और आर्थिक कठिनाइयों का सामना करते हुए छल कपटमय

राजनिति से कोसों दूर रहे।

आप ने 38 वर्षों तक अध्यापक की नौकरी की और राज्य के कई भागों में स्थानान्तरित होकर अपने कर्तव्य कर्म को नबाहया। करगिल, करनाह् टीटवाल और जम्मू क्षेत्र में अपनी सेवाएँ समर्पित कर आप सन् 1978 में सेवानिवृत्त हुए। आज कल विस्थापित होकर आप दुर्गानगर जम्मू मे जीवन व्यतीत कर रहे है और हर सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक कार्यक्रम में भाग लेते हैं।

'संजीवनी शारदा केन्द्र' (आन्द नगर बोड़ी–जम्मू) ने वर्ष 2003 ई० के शारदा पुरस्कार से तिक्कू साहब को सम्मानित करने का निर्णय लिया और यह पुरस्कार उन्हें 3 सितम्बर 2003 ई० को भव्य शारदा अष्टमी समारोह पर मुख्य अतिथि स्वामी अमृतानन्द जी के कर कमलों द्वारा प्रदान किया गया। सभा की अध्यक्षता सेवा निवृत्त उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री बी.एल भट्ट साहब ने की।

स्वर्गीय पण्डित दीना नाथ यक्ष
(सन् 1924 - 2004 ई०)
(शारदा पुरस्कार सन् 2004 ई०)

कश्मीर के सांस्कृतिक इतिहास में पण्डित दीना नाथ यक्ष का योगदान अभूत पूर्व रहा है। सन् 1924 ई० में यक्षजी का जन्म आली कदल श्रीनगर कश्मीर में एक प्रतिष्ठित पण्डित परिवार में हुआ। सन् 1942 ई० में पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर से शास्त्री की परीक्षा पास की और स्नातक होने के पश्चात जम्मू के चर्चित रणवीर संस्कृत पुस्तकालय में सेवारत हुए। यहाँ पाँच हज़ार पाण्डुलिपियों की तालिका/सूचीपत्र (Catalogue) निमार्ण में आप का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। कुछ समय के पश्चात जम्मू–कश्मीर राज्य के रिसर्च विभाग में 'पंडित' के पद पर नियुक्त हुए और यहाँ वर्षों प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों, पाण्डुलिपियों, शैवदर्शन से सम्बन्धित ग्रन्थों एवं तंत्र शास्त्र की बहुमूल्य रचनाओं को सूचीबद्ध करने में और प्राथमिक (परिचयात्मक) जानकारी प्रदान करने में सहयोग देते रहे। यहाँ इन्होंने कश्मीर शैवदर्शन एवं संस्कृत साहित्य सम्बन्धी हज़ारों पाण्डुलिपियों को जमा (एकत्र) किया जो आज भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर के रूप में कश्मीर विश्वविद्यालय के मध्य एशियाई अध्ययन केन्द्र (Centre of central Asian Studies) में सुरक्षित हैं।

पण्डित दीनानाथ यक्ष शारदा लिपि के एक योग्य एवं अनुभवी जानकार हैं (थे)। इस समय सारे भारत के शारदा लिपि विशेषज्ञों की अग्रिम पंक्ति में आपका नाम है। दीनानाथ जी के शारदा लिपि ज्ञान से कश्मीर रिसर्च डिपार्टमेंट ने भरपूर लाभ उठाया।

पण्डित दीनानाथ संस्कृत भाषा एवं व्याकरण के अनुभवी योग्य विद्वान एवं शिक्षक थे। अपना समस्त जीवन उन्होंने कश्मीर

शैवदर्शन और संस्कृत व्याकरण को पढ़ने और पढ़ाने में व्यतीत किया।

कश्मीर विश्वविद्यालय के हज़रतबल कैम्पस में स्थित जम्मू कश्मीर रिसर्च डिपार्टमेंट के शोध–पुस्तकालय में आप वर्षों कार्यरत रहे। यहीं पर मध्य एशियाई अध्ययन केन्द्र के साथ आप का सम्पर्क जुड़ गया। जीवन के उषा काल में सर्वश्री डॉ० राजेन्द्र प्रसाद डॉ० रघुनाथ सिंह एवं कविराज गोपी नाथ जी के सम्पर्क में आकर आपने सुव्यवस्थित रूप से कश्मीर शैवदर्शन पर अपना लेखन कार्य जारी रखा। कई शोधकर्ताओं ने आपके सम्पर्क में आकर आप से मार्ग दर्शन लिया जिन में सर्वश्री जय देव सिंह, जी नॉइल (G.Knolie) प्रोफेसर तोरेला, डॉ० एस. एस. तोशख़ानी डॉ० बद्री नाथ कल्ला एवं प्रो० वी. एन द्राबू आदि उल्लेखनीय हैं। स्वयं उन्होंने मुझसे कहा था कि साठ से अधिक शोध छात्रों का उन्होंने मार्ग दर्शन किया है।

स्वयं वे निरन्तर लेखन कार्य में लगे रहे। उन्होंने कई शोध पत्र लिखे और कई पुस्तकों के सम्पादन कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निबाही है। कश्मीरी भाषा में लिखित प्राचीनतम उपलब्ध पुस्तक 'महानय प्रकाश' जिसे पण्डित शितिकंठ ने 13 वीं शताब्दी के आस पास लिखा है, के कथ्य पर लिखा आपका शोध पत्र पर्याप्त चर्चित रहा है।

श्रीनगर में आपके निवास स्थान पर आप का निजी पुस्तकालय बहुमूल्य पुस्तकों, शोध ग्रन्थों और पाण्डु–लिपियों का संचित भाण्डार था जो विस्थापन के समय आतंकवाद की भेंट चढ़ गया।

जीवन के अन्तिम कालखण्ड में आप की नेत्र दृष्टि कमज़ोर हो गई थी लेकिन इस बात की चिन्ता न करते हुए भी आप संस्कृत ग्रन्थों, शारदा लिपि में लिखित पांडुलिपियों के पठन पाठन में तथा शोधार्थियों का मार्ग दर्शन करने में व्यस्त दिखाई देते।

पण्डित दीना नाथ यक्ष जी सरल एवं साधु प्रकृतिं के जीव थे। मितभाषी, संयत भाषी और मधुभाषी, सदा परोपकार की भावना से प्रेरित, व्यवहार में सहज एवं अकृत्रिम, ज्ञानवान महापण्डित, तर्क प्रदान करने में सक्षम, शैवशास्त्र की बारीकियों से पूर्ण परिचित एवं कश्मीर की सांस्कृतिक सम्पदा पर गहरी नज़र रखने वाले महा पुरुष थे।

सन् 2004 ई० के लिये संस्कृत विद्वानों का सम्मान करते हुए भारत के राष्ट्रपति महोदय ने पण्डित दीनानाथ यक्ष को 'राष्ट्रीय संस्कृत प्रतिष्ठान' सम्मान से विभूषित किया। यह माना गया कि यक्ष जी ज्ञान, आचार एवं विचार की जीवन्त प्रति मूर्ति हैं।'

'संजीवनी शारदा केन्द्र' आनन्द नगर बोडी (जम्मू) ने पण्डित दीनानाथ यक्ष जी को उनकी अतुलनीय सेवाओं के लिये 'शारदा पुरस्कार–2004 ई०' से सम्मानित करने का निर्णय लिया। 2004 ई० के शारदा–अष्टमी समारोह में 22 सितम्बर 2004 ई० के दिन एक भव्य समारोह में प्रख्यात संस्कृत आचार्य डॉ० विश्वमूर्ति शास्त्री के कर कमलो से यक्ष जी को ''शारदा पुरस्कार' प्रदान किया गया।

यक्ष जी ने समारोह में स्वयं उपस्थित रहकर यह सम्मान ग्रहण किया। वे पूर्ण स्वस्थ और प्रसन्नचित्त थे।

विधि की विडम्बना देखिये। केवल बारह दिनों के बाद अकस्मात् हृदय गति रुक जाने से यक्ष जी का देहान्त 5 अक्तूबर 2004 ई० को उनके निवास स्थान पर जम्मू में हुआ।

हिन्दी अनुवाद

'गुरु वाक् पर जो व्यक्त करे दृढ़ आस्था चित्त अश्व को ज्ञान–लगाम से नियंत्रित कर इन्द्रियों को वश में करके आनन्दित हो उठे फिर कौन मरे गा और किसको मारेंगे।

'लल वाख' –संख्या 55 ललद्यद' –प्रो० जिया लाल कौल

श्री अमर नाथ वैष्णवी
(सन् 1925 ई०)
(शारदा पुरस्कार सन् 2005 ई०)

बीसवीं शताब्दी के चौथे दशक से आजतक कश्मीरी– पण्डितों के संघर्ष प्रधान संकट–ग्रस्त जीवन की व्यथा को मुखर करने में माननीय पण्डित अमर नाथ वैष्णवी का अभूतपूर्व योगदान रहा है।

वैष्णवी जी ने जाति उत्थान के हेतु 'युगप्रतिनिधि महापुरुष' की भूमिका निबाही है। उनके व्यक्तित्व में सात दशकों का उलझा–सुलझा बीभत्स यथार्थ अपनी समस्त कटुताओं के साथ झलक रहा है। वे स्वयं अपने आप में एक इतिहास है, समय के थपेडों ने उन्हें विषपायी बना दिया। पण्डित वैष्णवी आजीवन अन्याय के विरूद्ध लड़ते रहे और आज भी 80 वर्ष आयुकी दहलीज़ पार करके जाति सेवा और राष्ट्र हित के हेतु संघर्षरत दिखाई दे रहे हैं। श्रीनगर के मूल निवासी पण्डित सर्वानन्द वैष्णवी के घर अमर नाथ का जन्म अगस्त सन् 1925 ई० में जम्मू में हुआ। उन दिनों इनके पूज्यपिता जी राज्य सरकार के सिंचाई विभाग में जम्मू में कार्यरत थे। माता श्री का नाम था– दिव्‌माल।

22 वर्ष की अवस्था में अमर नाथ जी का विवाह दुलारी जी (लक्ष्मीश्वरी) के साथ सन् 1957 ई० में सम्पन्न हुआ लेकिन वैवाहिक जीवन अल्पकालीन ही रहा। सन् 1962 ई० में निस्संतान लक्ष्मीश्वरी का देहान्त हुआ और अमर नाथ जी के जीवन में गृहस्थ जीवन का यह अध्याय सदा के लिये समाप्त हो गया।

अमर नाथ जी ने दसवीं कक्षा पास करके 'आर्ट एण्ड ड्यकोरेशन' में त्रिवर्षीय डिपलोमा पास किया और सब से पहले आर्य हाई स्कूल पठानकोट में अध्यापक नियुक्त हुए। सन् 1954 ई० में आप जम्मू कश्मीर राज्य के शिक्षा विभाग में अध्यापक नियुक्त हुए और सन् 1980 ई० में 27 वर्षों तक सरकारी नौकरी करने के बाद

सेवानिवृत्त हुए। श्रीनगर, हन्दवाडा, सोगाम एवं लद्दाख में अध्यापक के रूप में वर्षों इन्हें काम करने का अवसर मिला है। श्री अमरनाथ वैष्णवी एक समर्पित राष्ट्रभक्त, समाज सेवक, लोक हितैषी, एवं अद्भुत साहसी कर्मवीर होने के साथ–साथ एक चर्चित रंगकर्मी भी हैं। चित्रकार के रूप में वे आजीवन साधनारत रहे लेकिन कला को व्यवसाय के हेतु कभी प्रयोग में नहीं लाया।

छः वर्ष की आयु में अमर नाथ क्रान्तिकारी देश भक्तों के हेतु संदेश वाहक का काम करने लगे। सन् 1953 ई० में वैष्णवी जी ने सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया। 'प्रजापरिषद' द्वारा चलाये गये 'एक निशान, एक विधान, एक प्रधान, आन्दोलन में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। सन् 1967 ई० में 'कश्मीरी पण्डितआन्दोलन' जो एक पण्डित लड़की के अपहरण से आरम्भ हुआ, में वैष्णवी जी ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया और सत्ताधारियों की बर्बर नीतियों पर कठोर प्रहार किये।

सन् 1986 ई० में अनन्तनाग जिले के कई गाँव में पण्ड़ितों के धर्मस्थलों, मन्दिरों और देवमूर्तियों की जो दुर्गत बहु संख्यक जाति के कुछ सिरफिरे लोगों नेकी वैष्णवी जी ने उस अन्याय और कुकृत्य के विरुद्ध भी आवाज़ उठाई।

विस्थापन के बाद श्री अमर नाथ वैष्णवी एक कर्मठ योद्धा के समान सक्रिय हैं। कई बार इन्हें सत्ताधारियों का कोपभाजन बनना पड़ा परन्तु उनके दृढ़ निश्चय, निस्वार्थ सेवाभाव, एवं कर्तव्य निष्ठ व्यवहार कुशलता के सम्मुख सत्ताधारियों को भी झुकना पड़ा और इतिहास के पन्नों पर वैष्णवी जी की त्याग बलिदान मय जीवन गाथा स्वर्ण अक्षरों से अंकित हुई। कोई विस्थापित कश्मीरी पण्डित ऐसा नहीं होगा जो वैष्णवी जी से परिचित न हो क्योंकि इनका सम्बन्ध उपेक्षित, पीड़ित, कुपित, वंचित, शोषित और अपमानित उस अल्पसंख्यक समुदाय के साथ है जो इतिहास के भीषण आघात सहते हुए अपने ही देश में रिफ्यूजी की तरह जीवन जीने

को विवश है। स्वतंत्र भारत की राष्ट्रीय अस्मिता पर एक प्रश्न चिन्ह लगाकर यह जाति अपने अस्तित्व की रक्षा के हेतु संघर्ष रत रहकर लुट भी जाती है, पिट भी जाती है और मिट भी जाती है। वैष्णवी जी ने कश्मीरी पण्डितों की निष्कासन पीडाको राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर वाणी प्रदान करते हुए इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चलाये जाने वाले पाशविक बर्बरतापूर्ण षड़यंत्र का अंजाम (परिणाम) माना है। विश्व के विभिन्न मंचों पर पण्डित समाज का प्रतिनिधित्व करते हुए आपने यह सिद्ध कर दिया कि कश्मीर मात्र एक बहुसंख्यक धर्म परिवर्तित जाति बन्धुओं का ही देश नहीं है अपितु लाखों की संख्या में जी रहे बुद्धिजीवी पण्डितों का देश भी है। इस यथार्थ को विश्वसमुदाय के सम्मुख लाने में वैष्णवी जी की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

'आल स्टेट कश्मीरी पण्डित कांफ्रेस' के प्रधान के रूप में वैष्णवी जी कई वर्षों से पण्डित समाज का नेतृत्व कर रहे हैं। ''राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ' से आपका गहरा सम्बन्ध रहा है। संघ चालक के रूप में आपने वर्षों राष्ट्र की अखंडता और एकता के लिये निस्वार्थ सेवाभाव से काम किया है। वैष्णवी जी को इस बात पर गर्व है कि वे एक स्वयं सेवक हैं। आज भी इस पग धारी पण्डित के जय घोष ' जय कारा हर हर महा देव' को सुनते ही लोग उत्साह पूर्वक साथ देने के लिये पंक्ति बद्ध खड़े हो जाते हैं। ऐसे महान युग पुरुष, जाति वीर, कर्मठ योद्धा और निष्ठावान पण्डित को सन 2005 ई० में 'संजीवनी शारदा केन्द्र' (आनन्द नगर बोड़ी–जम्मू) ने शारदा पुरस्कार' से सम्मानित करने का निर्णय लिया और 11 सितम्बर 2005 ई० के दिन शारदा अष्टमी समारोह पर एक विशालजन सभा में मुख्य अतिथि स्वामी गिरिजेशानन्द जी ने वैष्णवी जी को सन् 2005 ई० के लिये शारदा पुरस्कार से सम्मानित किया। सभा में डॉ.के.एल. भाटिया एवं स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती महाराज (कलूसा बांडीपोरा–कश्मीर) भी विशिष्ट अतिथियों के रूप में उपस्थित थे।

श्री सुनील कौल
(सन् 1971 - 1992 ई०)
(मरणोपरान्त 'शारदा पुरस्कार वर्ष 2005 ई०

एक निम्न मध्य वर्गीय परिवार से सम्बन्धित श्री सुनील कौल का जन्म 1 जनवरी सन् 1971 ई० के दिन गाँव मनिगाम, तहसील और ज़िला गान्दरबल–कश्मीर निवासी स्वर्गीय जानकी नाथ कौल के घर में हुआ। सन् 1980 ई० में श्री जानकी नाथ कौल स्वर्ग सिधारे। 19 वर्ष की अवस्था में 12 वीं कक्षा पास सुनील कौल अपनी माता श्रीमती शीला कौल, दो बहनों और बड़े भाई के साथ सन् 1989 ई० में विवश होकर कश्मीर छोड़ कर जम्मू पहुँचे। ज़िन्दगी वीरान नज़र आ रही थी और सत्ताधारियों की अकर्मण्यता पर क्रुद्ध सुनील जान की बाज़ी लगाकर अपने वजूद की सार्थकता सिद्धकरने के लिये व्यग्र था। विस्थापन ने कश्मीर के अल्पसंख्यक समाज को अपने ही देश के भीतर रिफ्यूजी बन कर जीने के लिये विवश किया था। स्थिति दिन प्रतिदिन भीषण रूप धारण कर रही थी। रोज़ देशभक्त कश्मीरी पण्डित अपने प्राणों की आहुति चढ़ाकर स्वतंत्र भारत के पराश्रित मुखौटे पर कई प्रश्न चिंह लगा देते थे। चाहे वह राष्ट्रभक्त पण्डित टीकालाल टॅपलू होंया दूरदर्शन निदेशक पण्डित लस्सा कौल, साहित्यकार पंडित सर्वानन्द कौल प्रेमी होंया सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति पण्डित नीलकंठ गँजू, एडवोकेट प्रेमनाथ भट्ट होंया दूर संचार इंजीनियर बी. के गँजू, प्रोफ़ेसर कुंदन लाल गँजू होंया श्रीमती प्राणा गँजू, सूचना अधिकारी पी. एन. हंडू हों या राजकर्मचारी श्रीमती सरला भट्ट। रोज एक न एक बेकसूर के खून से माँ शारदा का प्रतिष्ठा पीठ लहू लुहान हो रहा था। आतंक ने पारस्परिक सौहार्द एवं बन्धुत्व की भावना को भयाक्रांत अविश्वास में बदल दिया था। होंठ सिलचुके थे। दिशाओं में मातमी मौन

छाया था। वातावरण सुनसान हो चुका था। सर्वत्र यमदूतों का पहरा था और चिताओं की लपटें गहनान्धकार के साथ बतिया रही थीं। ऐसी दमघोटू स्थिति से युवामानस का विचलित होना कोई असाधारण बात नहीं थी। भूत पिट चुका था, वर्तमाण लुट चुका था और भविष्य अनिश्चय के धुँधलके में घुम हो चुका था।

श्री सुनील कौल देशप्रेम और जातिहित की भावना से प्रेरित होकर असम्भव को सम्भव करने के उद्देश्य से आग के शोलों से खेलने के हेतु तथा जाति सम्मान की रक्षा के लिये आत्म बलिदान की वेदी पर चढ़ गया।

सितम्बर सन् 1992 ई० में 22 वर्षीय सुनील कौल एक विस्फोट में घायल होकर अंतरिक्ष के किसी दूरस्थ कोने में शहीदों की कतार में जाबैठे अपने पीछे प्रेरणादायक, उत्तेजना प्रधान खटी मीठी स्मृतियाँ छोड़कर।

'संजीवनी शारदा केन्द्र' (आनन्द नगर बोडी जम्मू) ने वर्ष 2005 ई० के लिये श्री सुनील कौल को मरणोपरान्त 'शारदा पुरस्कार' से सम्मानित करने का निर्णय लिया और 11 सितम्बर 2005 ई० के दिन शारदा अष्टमी के भव्यसमारोह में मुख्य अतिथि स्वामी गिरिजेशानन्द जी ने स्वर्गीय सुनील कौल की माता श्रीमती शीलाजी को यह सम्मान प्रदान किया। इस सभा में विशिष्ट अतिथियों के रूप में माननीय डॉ० के० एल भटिया एवं स्वामी सच्चिदानन्द जी भी उपस्थित थे।

सम्पूर्ण कश्मीरी पण्डित समुदाय एक कर्मनिष्ठ युवा बन्धु के आत्मोत्सर्ग पर श्रद्धा-सुमन निछावर करता हुआ पुकार उठा।

'वतन पर मरने वालों का यही नामोनिशान होगा'।

शहीद पण्डित सर्वानन्द कौल 'प्रेमी'
(2 नवम्बर 1924 - 1 मई 1990)
(मरणोपरान्त 'शारदा पुरस्कार वर्ष 2006 ई०)

'शहीदों की चिताओं पर लगें गे हर बरस मेले।
वतन पॅ मरने वालों का यही नामो निशान होगा।।'

कश्मरीर भाषा के चर्चित कवि, अनुवादक, गद्य लेखक एवं पत्रकार पण्डित सर्वानन्द कौल 'प्रेमी' सोफ शाली ज़िला अनन्तनाग के मूल निवासी थे। घाटी के एक जाने माने सेवा निवृत्त मुख्य अध यापक, अत्यन्त सौम्य, सुसभ्य, मधुभाषी ग्रामनिवासी कश्मीरी पण्डित जो सर्वधर्म सम्मान एवं बन्धुत्व की भावना से प्रेरित होकर विषम परिस्थितियों में भी जन्म भूमि से प्रयाण करने के लिये तैयार नहीं हुआ। परिणाम...........अत्यतं भयंकर रोमरोम कम्पा देने वाला। 29 अप्रैल 1990 ई० तीन आतंकवादी सायम् उनके घर मे हठात् घुस आये और उन्हें उनके 27 वर्षीय पुत्र वीरेन्द्र कौल सहित अपने संग ले गये। पहली मई को सूचना मिली कि पिता–पुत्र के शव भयावह अवस्था में फांसी की रस्सी में लटकते मिल गये हैं। दोनों की आँखें बाहर निकाल दी गई थी। भग्न शरीर अंग, त्वचा दग्ध और कटी हुई, जलते सिग्रेटों से शरीर भूना हुआ, दोनों की गर्दनें टूटी हुई और गोलियों से छलनी शरीर–कश्मीरियत के नाम पर काला धब्बा। इस तरह का विश्वासघात कि इंसानियत रुसवा होकर काँप उठे। सोफ शाली में महाकाल का प्रवेश और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चलाये जा रहे आतंकी षडयन्त्र से सम्पूर्ण गाँव त्रस्त और क्षुब्ध। गाँव की जड़ और चेतन प्रकृति मातम में कराह उठी। बुजुर्गों ने रोया। सोफशाली के भव्य इतिहास पर ऐसा कलंक लग गया कि रोज़े महशर (क़यामत, महाप्रलय) तक इसको मिटाया नहीं जा सकता।

पण्डित सर्वानन्द कौल 'प्रेमी' और उनके युवा पुत्र श्री वीरेन्द्र कौल, जो केन्द्र सरकार के एक कार्यालय में कर्मचारी थे, की बड़ी निर्ममता के साथ हत्या की गई। निरपराध जन के रक्त की एक एक बून्द आज भी जाति बन्धुओं को पुकार पुकार कर अस्तित्व रक्षा के हेतु आहुति चढ़ाने का आह्वान करती है।

पण्डित सर्वानन्द कौल 'प्रेमी' ने बीस से अधिक रचनाएँ प्रकाशित की जिनमें उनके काव्य संग्रह 'कलाम–ए–प्रेमी' और 'पयाम–ए–प्रेमी 'उल्लेखनीय हैं। महा कवि टैगोर कृत 'गीतांजलि' का कश्मीरी पद्यानुवाद अपने आप में विशिष्ट एवं मौलिक है। 'माता रूप भवानी' (हिन्दी) तथा 'संत मिर्ज़ काक' (उर्दू) आप की पर्याप्त चर्चित रचनाएँ रही हैं। वस्तुतः 'मिर्ज़काक जीवन और कृतित्व' (1960 ई०) तथा 'मिर्ज़ काक जीके वाख' (1960 ई०) दो अलग अलग पुस्तिकाएँ प्रकाशित हुई हैं।

इसके अतिरिक्त 'ओश तुव्श', 'पंचतंत्र' (काव्य संग्रह) 'भक्ति कोसुम' एवं 'मथरा देवी' उनकी उन्य प्रकाशित रचनाएँ हैं।

प्रेमी जी की लगभग बीस रचनाएँ अप्रकाशित अवस्था में उनके परिवार जनों के पास आज भी सुरक्षित हैं। इन रचनाओं में 'रामायण', 'पुशकिन सँज़ नज़म', आराधना', लल्लेश्वरी', 'हमारा महजूर' तथा 'परमार्थ शतक' उल्लेखनीय हैं। किसी भी संस्था ने आज तक इन रचनाओं को प्रकाशित करने की व्यवस्था नहीं की है जो अत्यंत दुर्भाग्य पूर्ण है। काश! इनके प्रकाशन की व्यवस्था हो जाती, 'प्रेमी' जी की रचनात्मक प्रतिभा के कई और पहलू उजागर हो जाते।

सन् 1997 ई० में जम्मू कश्मीर सरकार ने मरणोपरान्त उन्हें सम्मानित किया और जम्मू कश्मीर विचार मंच ने 'कृष्ण जूराजदान समारोह वर्ष' सन् 2000 ई० में उन्हें मरणोपरान्त श्री भट्ट पुरस्कार

से सम्मानित किया। पण्डित सर्वा–नन्द कौल 'प्रेमी' सर्वधर्म सम्मान एवं समभाव में विश्वास रखते थे। क्या प्रतिक्रिया रही होगी सोफशाली के बुजुर्गों की तब जब उन्होंने प्रेमी के पूजा घर में श्रीमद् भगवद् गीता के साथ 'कुरान शरीफ़' को देखा होगा। सचमुच आज भी सोफशाली की फ़जाओं में प्रेमी के गीत गूँज रहे हैं :–

'क्रख दिच़कॅमताम खशगव कस
क्याह ताम गोमुत यति कस ताम
युस वरतावान लोला पोज़
तस यति चावान ज़हरुक जाम
प्रेमी चॉनी जीत च़वपॉर्य
गॅछ तन पॅहरा बुथ फ्युर आम!'

स्वर्गीय पण्डित सर्वानन्द कौल 'प्रेमी' के आत्मबलिदान का सम्मान करते हुए तथा उनके आदर्श साधना प्रधान जीवन से प्रेरणा ग्रहण करने के हेतु 'संजीवनी शारदा केन्द्र' (आनन्दनगर बोडी–जम्मू) ने वर्ष 2006 ई० का 'शारदा पुरस्कार' मरणोपरान्त पण्डित सर्वानन्द कौन प्रेमी को प्रदान करने का निर्णय लिया। वस्तुत : ऐसे महान जाति बन्धुओं का सम्मान करते हुए संजीवनी शारदा केन्द्र कश्मीर के सांस्कृतिक इतिहास में नम्रता पूर्वक दुर्घटना पूर्ण इतिहास की सच्चाई को भावी पीढ़ी के हेतु शब्द बद्ध कर रहा है।

एक सितम्बर 2006 ई० के दिन 'शारदा अष्टमी समारोह' में एक विशाल जन समूह की उपस्थिति में मुख्य आतिथि स्वामी प्राणनाथ भट्ट 'गरीब' (भाई जी) ने शहीद स्वर्गीय सर्वानन्द कौल प्रेमी को मरणोपरान्त 'शरदा पुरस्कार' प्रदान किया जिसे उनके यशस्वी सुपुत्र श्री राजेन्द्र प्रेमी जी ने ग्रहण किया।

प्रोफ़ेसर (डॉ०) भूषण लाल कौल
(सन् 1941 ई०)
'शारदा पुरस्कार वर्ष 2006 ई०
(यह समान-पत्र श्री प्रदीप कौल खोड़बली जी ने लिखा है)

'भूषण' शब्द का पर्याय जेवर अथवा 'आभूषण' होता है। शायद यही बात पण्डित दामोदर कौल के मन में भी उठी होगी जब उन्होंने सन् 1941 ई० में अपने बेटे का नाम भूषण लाल रखा होगा। वही बालक आज अपनी बहुमुखी प्रतिभा लिये हुए साहित्य एवं शोध जगत में चमक रहा है। मेरा संकेत प्रोफ़ेसर (डॉ०) भूषण लाल कौल की ओर है।

प्रोफ़ेसर साहब ने जीवन को क़रीब से देखा है, जीवन को भोगा है और जीवन के कटुतम प्रहार झेलें हैं। प्रहार झेलते झेलते वे तपकर कुन्दन होगये हैं। जब डॉ० साहब बोलते हैं तो एक धीमा ज्वालामुखी पाण्डित्य की मन्द–मन्द ज्वालाएँ विखेरने लगता है।

बाल्यकाल से ही कौल साहब एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी रहें हैं। उन्होंने 1957 ई० में मैट्रिक, 1959 में इन्टरमिडेट, 1961 ई० में स्नातक तथा सन् 1963 ई० में एम.ए (हिन्दी) की परीक्षा प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान लेकर उत्तीर्ण की। इसके पश्चात इन्होंने शोध कार्य को अपना विषय चुना और सन् 1968 ई० में इन्हें हिन्दी कवि बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन' तथा कश्मीरी कवि गुलाम अहमद 'महजूर' के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन कर लिखे गये विस्तृत शोध प्रबन्ध (Thesis) पर पीएच. डी की उपाधि से अलंकृत किया गया। शोध कार्य को आगे बढ़ाते हुए सन् 1985-87 में इन्होंने

आधुनिक कश्मीरी काव्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ, (सन् 1850 - 1970 ई०) (प्रतिनिधि कवियों के कृतित्व पर आधृत) विषय पर एक विस्तृत शोध – प्रबन्ध लिखा जिस पर उन्हें वर्षों प्रतीक्षा करने के बाद (नौ वर्ष) सन् 2001 ई० में कश्मीर विश्वविद्यालय से डी.लिट की उपाधि प्राप्त हुई। डॉ कौल कश्मीरी विश्वविद्यालय के इतिहास में प्रथम कश्मीरी हैं जिन्हें विश्वविद्यालय से डी.लिट की उपाधि प्राप्त हुई है।

विस्थापन से पूर्व डॉ. कौल कश्मीर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक के रूप में कार्यरत रहे, तत्पश्चात इसी विभागके विभागाध्यक्ष के पद पर भी आसीन रहे। इसके अतिरिक्त इन्होंने 1980 ई० से 1984 ई० तक विश्वविद्यालय में छात्र कल्याण अधिष्ठाता' (Dean Student Welfare) के रूप में प्रशंसनीय कार्य किया। आप चार वर्ष तक विश्वविद्यालय में एन.एस.एस समन्वयक (Coordinator) भी रहे। विस्थापन के पश्चात् विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (U.G.C) की Visiting Faculty Position Scheme के अंतर्गत जम्मू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में 1989 ई० से 2001 ई० तक अध्यापन कार्य करते रहे। तत्पश्चात सितंबर 2001 ई० में सेवानिवृत्त हुए। अपने 37 वर्षीय कार्यकाल में इन्होंने छः पीएच. डी शोधकर्ताओं का सफल मार्गदर्शन भी किया है।

डॉ कौल एक कुशल अध्यापक और शोधकर्ता ही नहीं वरन् एक प्रशिक्षित एन.सी.सी प्रशिक्षार्थी –'बी' और 'सी' प्रमाणपत्र धारी एवं 'नेहरू पर्वतारोहन संस्थान' उत्तरकाशी (उत्तरांचल) से प्रशिक्षित एक कुशल पर्वतारोही भी हैं। विश्वविद्यालय के कई छात्रदलों का पर्वतारोहन में आपने नेतृत्त्व किया है।

डॉ० कौल एक कुशल भाषाविज्ञ, कुशलवक्ता एवं कुशल लेखक

भी है। इनकी वाक पटुता एवं लिखने की मौलिक प्रतिभा अद्वितीय
है। विस्थापन की पीड़ा एवं पत्नी का अल्पायु में निधन, ने डॉ०
कौल को हिला कर रख दिया। आन्तरिक सृजनात्मक भूमि पर
वेदना और करूणा के फूल उग आए। हम उन फूलों को एक एक
मौलिक पुस्तक के रूप में ग्रहण करने लगे। आपकी कई पुस्तकें
छप चुकी हैं जिनमें 'शारदा–गाँव, तीर्थ एवं विद्यापीठ', 'साहित्य
और विस्थापनः संदर्भ कश्मीर', 'अरज़थ', 'विमर्श' 'प्रज़नथ', 'परमानन्द',
कृष्णजूराज़दान, तथा 'पंखुरियाँ गुलाब की' उल्लेखनीय हैं। भगवान
गोपी नाथ ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित 'कश्मीर की संतपरम्परा' का
सम्पादन भी आप ने किया है। आज आप की शोध पत्रों पर आध
ारित दो पुस्तकें मुद्रणाधीन हैं। इनके अतिरिक्त कश्मीर इतिहास,
संस्कृति और सहित्य पर आधारित कई महत्त्वपूर्ण वार्ताएँ, जो
आपने लिखी हैं, आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से प्रसारित हुई हैं।

आधुनिक कश्मीरी और हिन्दी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन
साहित्य के इस क्षेत्र की ओर विद्वानों को आकृष्ट करना तथा
कश्मीरी साहित्य (गद्य एवं पद्यलेखकों) को हिन्दी भाषा के माध्यम
से व्यापक जन मानस तक पहुँचाना आप के कृतित्व का मुख्य
उद्देश्य रहा है।

आप को हिन्दी और कश्मीरी दोनों भाषाओं पर समान अधिकार
प्राप्त है और दोनों भाषाओं में आप लेखन कार्य कर रहे हैं। विभिन्न
पत्र पत्रिकाओं में आप की एक सौ से अधिक रचनाएँ प्रकाशित हो
चुकी हैं। आप कई संस्थाओं के साथ भी जुड़े हुए हैं। इन में
'संजीवनी शारदा केन्द्र' 'उद्धार', नागराद', सम्प्रति', 'पण्डित प्रेमनाथ
शास्त्री शोध संस्थान' एवं 'नॉग्यराय' प्रमुख हैं। 'संजीवनी शारदा
केन्द्र' के आप संस्थापक न्यासी हैं और इसके प्रथम अध्यक्ष भी रह

चुके हैं। यह कार्यकाल नौं वर्षों का रहा है। आप के कृतित्व एवं सामाजिक साधना को सराहते हुए कई सामाजिक एवं साहित्यिक संस्थाओं ने आप को विभिन्न पुरस्कारों से अलंकृत किया है। इनमें पण्डित प्रेमनाथ भट्ट म्यमोरियल अॅवार्ड', 'वितस्ता अॅवार्ड', 'मरहूम जी एम सादिक' अॅवार्ड, 'अभिनव गुप्त अॅवार्ड, 'शारिका सम्मान तथा 'कश्मीरी पण्डित सभा जम्मू' द्वारा विशेष सम्मान उल्लेखनीय हैं। आजकल आप आध्यात्मिक क्षेत्र में अपना योगदान दे रहे हैं। समाज में धर्म एवं संस्कृति का वास्तविक रूप प्रस्तुत करने के हेतु आप हमारी संस्कृति के स्त्रोत रामायण एवं भागवत के प्रचार–प्रसार में लगे हैं।

'संजीवनी शारदा केन्द्र' ने आपको बहुत पहले शारदा पुरस्कार से सम्मानित करना चाहा था परन्तु केन्द्र का अध्यक्ष होने के नाते आपने पुरस्कार लेने से इंकार किया। समाज के प्रति आपके समर्पण भाव को ध्यान में रखकर केन्द्र योग्य व्यक्तियों को सम्मानित करने में अधिक देर तक अवहेलना नहीं कर सकता अतः केन्द्र के न्यास ने वर्ष 2006 का 'शारदा–पुरस्कार' ग्रहण करने के हेतु आप महानुभाव का चयन किया।

पहली सितम्बर 2006 ई० के दिन शारदाष्टमी के भव्य समारोह में विशाल जनसमूह की उपस्थिति में समारोह के मुख्य आतिथि आनन्द स्वामी प्राण नाथ भट्ट ग़रीब (भाई जी) ने आप को 'शारदा पुरस्कार 2006 ई० से अलंकृत किया।

स्वर्गीय पण्डित केशव भट्ट ज्योतिषी

(1873-1949 ई०)

शारदा पुरस्कार' 2007 ई०

श्रीनगर–कश्मीर में स्थित रैणावारी इलाके के जोगीलंगर मुहल्ले में एक प्रतिष्ठित कश्मीरी ब्राह्मण परिवार रहता था। 19 वीं शताब्दी के मध्य काल खण्ड में इसी परिवार में पण्डित सतराम का जन्म हुआ। सतराम के छः पुत्रों में तीन पण्डित मुकुन्दराम (महाराजा प्रताप सिंह के राज ज्योतिषी), पण्डित प्रसाद भट्ट एवं पण्डित केशव भट्ट संस्कृत भाषा के पूर्णज्ञाता एवं ज्योतिष विद्या में निपुण थे।

पण्डित केशव भट्ट अपने ज्येष्ठ भ्राता पण्डित प्रसाद भट्ट के दत्तक पुत्र थे। प्रसाद भट्ट निस्संतान थे।

पण्डित केशव भट्ट का जन्म विक्रमी संवत् 1930 तदनुसार सन् 1873 ई० में हुआ था। वे आत्रेय गोत्र में जन्मे हुण्डू थे। इन के नाम के साथ –सिक्ख' उपनाम जुड़ गया था और इस नाम का अपना इतिहास है। इन का स्वर्गवास संवत् 2006 विक्रमी तदनुसार 1949 ई० में आश्विन कृष्ण पक्ष द्वितीया के दिन हुआ।

केशव भट्ट एक कर्मकांडी पण्डित थे। महागायत्री के उपासक और शक्ति माँ के अनन्य भक्त। पेशे से पाठशाला अध्यापक थे। गान्दरबल ज़िला के 'नुनर' गाँव, जो गान्दरबल से लगभग तीन किलोमीटर दूर है, में स्थित पाठशाला मं बच्चों को पढ़ाते थे। श्रीनगर से प्रायः पैदल चलकर नुनर पहुंचते थे और वहां से लौट कर धार्मिक अनुष्ठानों के निर्वाह में लगे रहते थे।

पण्डित केशव भट्ट संत प्रकृति के एक ज्ञानी महा पण्डित थे। संस्कृत भाषा में लिखित धार्मिक ग्रन्थों का उन्होंने गहन अध्ययन

किया था। वे शारदा लिपि से भी पूर्ण परिचित थे। निरन्तर अध्ययन, मंनन चिंतन और ज्ञानार्जन में लीन रहते थे।

पण्डित केशव भट्ट गृहस्थ थे। ज्योतिष विद्या के विशेषज्ञ एवं पचांग निर्माण के कुशल आचार्य थे। प्रायः गणना करके हाथ से पचांग लिखते थे। वे सदा इस बात के लिये चिन्तित रहे कि कर्मकांड के मूल ग्रन्थों को सुरक्षित रखा जाये और उन के सरल एवं संक्षिप्त रूप ब्राह्मण परिवारों तक पहुंचे। एक कुशल सम्पादक की भूमिका निबाहते हुए कश्मीरी कर्मकांड से सम्बन्धित शारदा लिपि में लिखित हस्तलिखित पांडुलिपियां वे एकत्र करते रहे। उन्होंने कर्मकांड से जुडे अनुष्ठानों की एक मानक विधि तैयार की। बम्बई के 'निर्णय सागर प्रेस' से उन्होंने पुस्तिकाएं प्रकाशित करवाई और उन्हें बहुत सस्ते दामों पर पण्डितों के लिये उपलब्ध करवाया। इस प्रकार कश्मीरी पण्डितों के धार्मिक अनुष्ठानों को जन जन तक पहुंचाने में उनका अविस्मरणीय योगदान रहा है।

नित्य कर्म विधि' प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय भाग, शिव पूजा, सौन्दर्य लहरी पंचस्तवी सहितः, देवी पूजा विधि, कर्मकांड (प्रथम भाग), मेखला पुस्तक, पार्थिवेश्वर पूजा, भवानी सहस्रनाम, काश्मीर ज्योतिष संग्रह, विष्णुसहस्रनाम, गणेश सहस्रनामावली, राज्ञी, ज्वाला एवं शारिका सहस्रनामावली, उन की चर्चित पुस्तिकाएं हैं।

केशव भट्ट निस्संदेह एक कर्मयोगी पण्डित एवं ज्योतिषा चार्य थे। उन की विद्वत्ता, सहजता एवं ज्ञान गरिमा की चर्चा सर्वत्र होती थी। विज्येश्वर कश्मीर के महापण्डितों से बहुत पहले ज्योतिषी केशव भट्ट 'सिक्ख' ने कश्मीरी पण्डितों के धार्मिक जीवन में अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रवेश किया था। उस युग में डफली अधिक नहीं बजती थी। साधना के स्तर पर जन कल्याण एवं धर्म प्रचार के

हेतु निष्काम भाव से सेवाकार्य निष्पन्न होते थे।

एक निस्स्वार्थ कर्मयोगी, महापण्डित, ज्योतिषाचार्य, विद्वान शिक्षक एवं लोक हितैषी को मरणोपरान्त 'शारदा पुरस्कार' से सम्मानित करने में स्वयं संजीवनी शारदा केन्द्र की प्रतिष्ठा में वृद्धि हो रही है। ट्रस्ट ने सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया कि वर्ष 2007 के लिये स्वर्गीय ज्योतिषी केशव भट्ट को शारदा पुरस्कार प्रदान किया जाये।

20 सितम्बर 2007 ई॰ के दिन शारदा अष्टमी के महा पर्व पर एक विशाल जन सभा में स्वर्गीय ज्योतिषी केशव भट्ट को सभा के मुख्य अतिथि सेवानिवृत ब्रिगेडियर सुचेत सिंह जी ने 'शारदा पुरस्कार' से अलंकृत किया और यह पुरस्कार ज्योतिषी जी के पौत्र पण्डित शम्भू नाथ भट्ट ने स्वयं सभा में उपस्थित रह कर ग्रहण किया।

ज्येष्ठा देवी प्रबन्धक कमेटी - श्रीनगर-कश्मीर शारदा पुरस्कार' 2007 ई॰

बहुत समय तक देवता गण राक्षसी दलों के अन्याय पूर्ण कुकृत्यों से पीड़ित और अपमानित होते चले आये हैं। पौराणिक कथानुसार असुरों का दुस्साहस सीमाओं के बन्धन तोड़कर महालक्ष्मी को उठाकर गुपकार (श्रीनगर) के निकट एक गुफा में छिपा लेते है। परमशिव अपनी असाधारण शक्ति से शक्ति–स्वरूप ज्येष्ठा और वीर वैताल को जन्म देकर उन्हें लक्ष्मी उद्धार का पुनीत कर्तव्य सौंप देते हैं। ज़ीठ–यॉर का देवी स्थल उसी शक्ति माता ज्येष्ठा का निवास गृह है। आज भी सम्पूर्ण कश्मीर घाटी में शारदा से लेकर मंजगाम तक बीस से अधिक शक्ति पीठ विद्यमान हैं। पुरातन काल से ही कश्मीर एक चर्चित शक्ति पीठ रहा है। भारत के बावन शक्तिपीठों में प्रद्युम्न पीठ (हारी पर्वत चक्रेश्वरी पीठ) सर्वश्रेष्ठ एवं रहस्यमय है। ज़ीठ यॉर वस्तुतः माँ शक्ति का अद्भुतनिवास है। ज्येष्ठ ऋतु में हर बृहस्पतिवार को यहां धार्मिक मेला लगाता है, और परम्परानुसार भक्त–जन माता को पीले चावलों की भेंट चढ़ा कर आशीर्वाद और अनुग्रह प्राप्ति हेतु पूजार्चन में निमग्न रहते हैं।

विस्थापन के बाद माँ के विश्राम स्थल का पुनरुद्धार हुआ और आज माता के आशीर्वाद से यह पावन स्थल कश्मीरी पण्डितों की पहचान के साथ जुड़ गया। जुलाई 2002 ई॰ में एक विशाल जन सभा में इस की प्रबन्धक कमेटी के सदस्यों का चुनाव हुआ और श्री कुलदीप रैणा जी इस के प्रधान निर्वाचित हुए। तब से आज तक रैणा साहब ने मुड़ कर पीछे नहीं देखा और तीर्थ स्थान को एक नव्य रूप प्रदान करने हेतु तनमन से जुट गये। इन के नेतृत्व में ज्ये ष्ठा दे वी प्रबन्धक कमेटी के अन्य सदस्यों जिन में उप प्रधान, प्रधान सचिव, प्रचार सचिव तथा अन्य सदस्यों का योगदान भी प्रशंसनीय रहा है।

मंदिर परिसर में पूजा मंडल का पुनर् निर्माण, यात्री भवन का

निर्माण तथा पहले सेही बनाये गये कमरों की मरम्मत एवं दशा–सुधार, हवन शाला कानिर्माण, स्नान गृह एवं शौचालयों का निर्माण, स्वच्छ पानी की उपलब्धि की व्यवस्था, जन सेवा कार्य के रूप में पब्लिक टेलीफोन बूथ की व्यवस्था, सम्पूर्ण देवी परिसर पर विशेष कर माता के अमृत कुंड के निकट बिजली की व्यवस्था, पास के शिव मंदिर का पुनर् उद्धार कार्य तथा मार्बल पत्थर लगाने की व्यवस्था, भोजनालय एवं वस्तु भण्डार गृह का निर्माण, तथा यात्रियों और भक्तजनों के हेतु एक सभा गृह का निर्माण, सन्तों एवं महापुरुषों के आवास की व्यवस्था, माता के द्वार पर महागणेश की मूर्ति स्थापना, बुद्धि जीवियों, सन्तों और महापुरुषों द्वारा धार्मिक एवं सांस्कृतिक विषयों से जुडें प्रवचनों की व्यवस्था, माता के दरबार में महायज्ञ रचाने का आयोजन तथा अन्य निर्माण कार्य आजकल मां के योग्य भक्त श्री कुलदीप रैणा की देख–रेख में पूरे किये जारहे हैं।

आज कई यात्री सपरिवार एक साथ कुछ दिनों के लिये ज्येष्ठा देवी परिसर पर रह सकते हैं और प्रबन्धक कमेटी ने उन के रहने की समस्त आवश्यक सुविधाएं (गैस, बरतन, बिस्तर, कम्बल, प्राथमिक चिकित्सा, जनरल स्टोर आदि) उपलब्ध रखी हैं।

प्रबन्धक कमेटी की भविष्य कालीन योजनाएं भी सराहनीय हैं। यात्री भवन का विस्तार, आठनये आवासीय कमरों का निर्माण जिन में प्रत्येक कमरे के साथ एक छोटा किचन और बाथरूम जुड़ा होगा, कमरों में पानी बिजली की व्यवस्था, पूजा मंडप की साज सज्जा तथा देवी परिसर को आर्कषक बनाने की योजनाएं हाथ में ली जा रही है। बहुमंजिला यात्री भवन बनाने के विषय में भी विचार हो रहा है। और एक बड़े आकार का जल कुंड भी बन कर तैयार हो गया। अतः परिसर में पेयजल की समस्या का निवारण हो गया।

विकट परिस्थितियों में असाधारण साहस और संकल्प शक्ति का परिचय देते हुए ज्येष्ठा देवी प्रबन्धक कमेटी ने घाटी में हिन्दुत्व के

सम्मान की रक्षा करते हुए एक सांस्कृतिक शक्ति स्त्रोत को जनमानस के साथ जोड़ दिया। प्रबन्धक कमेटी का सेवाभाव स्तुत्य है। कमेटी के अध्यक्ष श्री कुलदीप रैणा तथा उन के अन्य सहयोगी साधुवाद के पात्र हैं। आप लोगों ने अद्‌भुत कार्य क्षमता का परिचय देते हुए आन्धी तूफानों का सामना किया और आज प्रत्येक कश्मीरी पण्डित माँ ज्येष्ठा के दरबार का गौरवशाली रूप देख कर हर्षित हो रहा है।

मूलतः कश्मीर शक्ति उपासना का प्रमुख केन्द्र रहा है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि माता चक्रेश्वरी के रूप में देवी माँ हारीपर्वत को सुशोभित कर रही है और राज्ञण्य देवी के रूप में मंजगाम (कुलगाम कश्मीर) रायथन (तहसील बड़गाम कश्मीर), बॉदपुर (तहसील चाडोरा कश्मीर), टिक्कर (कुपवाडा) एवं तुलामुला (गान्दरबल) में विराजमान है। हँदवाड़ा में भद्र काली, बारामूला में शैलपुत्री, रिव्रव में ज्वाला देवी एवं उमानगरी उतरसू (ब्रारिआंगन) में उमा देवी के रूप में माँ भक्तजनों को मोह रही है।

'संजीवनी शारदा केन्द्र' आनन्द नगर बोड़ी ने वर्ष 2007 के लिये ज्येष्ठा देवी प्रबन्धक कमेटी श्रीनगर को 'शारदा पुरस्कार' देने का निर्णय लिया। 20 सितम्बर 2007 ई० को एक भव्य समारोह में मुख्य अतिथि सेवानिवृत्त ब्रिगेडियर सुचेत सिंह जी एवं संजीवनी शारदा केन्द्र के अध्यक्ष प्रो० टी. एन शाला जी ने ज्येष्ठा देवी प्रबन्धक कमेटी के प्रधान श्री कुलदीप रैणा जी को, शारदा पुरस्कार से सम्मानित किया। श्री कुलदीप रैणा जी ज्येष्ठा देवी प्रबन्धक कमेटी के मुख्य प्रतिनिधि के रूप में जन सभा में सम्मिलित होने के लिये श्रीनगर से जम्मू पधारे थे।

एक संस्था को शारदा पुरस्कार से सम्मानित करने का यह पहला अवसर था। इस से पूर्व व्यक्ति विशेष ही सम्मानित हुए थे, लेकिन सन् 2007 ई० में व्यक्ति के साथ साथ एक संस्था के सेवा कार्य को सम्मान पाने के योग्य समझा गया।

शारदा पुरस्कार' 2008 ई.

प्राप्तकर्त्ता : श्रीअमरनाथ यात्रा संघर्ष समिति, जम्मू

30 जून सन् 2008 ई. के दिन गठित 'श्री अमरनाथ यात्रा संघर्ष समिति, जम्मू अत्यंत अल्पकाल में आस्था आधारित रक्तरंजित 63 दिवसीय जनान्दोलन का नेतृत्व करते हुए न केवल जम्मू कश्मीर राज्य में अपितु सम्पूर्ण भारत में एक प्रवाह युक्त शक्ति स्त्रोत के रूप में उभर कर सामने आई है। निष्ठावान, संकल्पबद्ध, दयानतदार वरिष्ठ एडवोकेट श्री लीला करण शर्मा जी के नेतृत्व में इस समिति ने जो कुछ हम सब के लिये प्राप्त किया, राज्य के सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास में उसका तथ्याधृत एवं तर्काश्रित उत्साह वर्धक वृतान्त स्वर्ण अक्षरों से लिखा जायेगा, इस मं कोई सन्देह नहीं।

बम–बम भोले, ये बाल गोपाल कहां चले जेलचले भाई जेल चले तथा जिस कश्मीर को खून से सींचा वह कश्मीर हमारा है। ये जय घोष न केवल महादेव के अद्भुत वैभव एवं लीलामय प्रताप का पुनः स्मरण है अपितु शत्रु ह्वदय को दहला देने वाले जयघोष हैं, जिन्होंने वंचित, उपेक्षित, तिरस्कृत जनमानस में सम्मान युक्त जीवन जीने की प्रबल इच्छा को जाग्रत किया। यह अन्याय के विरुद्ध जनमानस के उफनते आक्रोश को सकारात्मक रूप में आगे ले चलने का सच्चा प्रयास था। जन मानस से अभिप्राय हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, गुजर एवं पहाड़ी लोग जो जम्मू संभाग में वर्षो से रहते चले आयें हैं आज पहली बार एक दूसरे के साथ हाथ से हाथ मिलाकर भोलेशंकर के आह्वान से जगकर अन्याय और अधर्म के विरुद्ध एक साथ खड़े हो गये। बालतल कश्मीर के निकट भोले महादेव की 800 कनाल भूमि जबरदस्ती छीन ली गई थी, उसे पुनः प्राप्त करने के हेतु जनाक्रोश पूरे उफ़ान के साथ उबल पड़ा।

एक दो वर्षीय नवजात बालकों से लेकर 80 वर्ष और उस से भी

अधिक आयु के वृद्ध बुजुर्गो, माताओं, बहनों, बेटियों, नवयुवकों, सेवानिवृत सैनिकों और आतुरवीर ग्रामवासियों ने गिरिफतारियां पेश की और सत्ताधारियों के कुकृत्यों का परदा फाश करते हुए अपनी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

23 जूलाई सन् 2008 ई. के दिन बिशनाह निवासी श्री कुलदीप वर्मा ने संघर्ष को एक नई जीवन शक्ति प्रदान करने के हेतु अपने प्राणों की आहुति चढ़ा दी, फिर एक के बाद एक आहुति चढ़ती रही। लगातार 39 दिवसीय जम्मू बन्द में राजसत्ता काविरोध करते हुए दो हज़ार से अधिक लोग घायल हुए।

समाज के हरवर्ग ने श्री अमरनाथ यात्रा संघर्ष समिति के नेतृत्व में आन्दोलन को अन्तिम लक्ष्य तक पहुंचाने के हेतु अपना सहयोग प्रदान किया। अन्ततः सताधारियों को झुकना पड़ा। दिल्ली जाग उठी और न्याय के आश्रय में अन्याय को लज्जित होकर शक्तिहीन अवस्था में प्रायश्चित करते हुए बम भोले के सम्मुख नतमस्तक होना पड़ा। इस प्रकार 30 जून 2008 ई. से 31 अगस्त 2008 ई. तक संघर्ष समिति के नेतृत्व में चलाये गये जन आंदोलन ने जम्मू जन मानस को परस्पर जोड़ा, संगठित किया और भिन्नत्व से एकत्व के अंकुर फूट पड़े।

कश्मीरी पण्डित इस 63 दिवसीय जन आन्दोलन का एक अविभाज्य अंग बन गया। न केवल जम्मू में अपितु राजधानी में जन प्रदर्शनों का आयोजन कर पण्डित और डोगरा परस्पर सदा के लिये जुड गये। दूध में शक्कर मिल गया।

संजीवनी शारदा केन्द्र आनन्द नगर, जम्मू ने वर्ष 2008 का 'शारदा पुरस्कार' श्री अमरनाथ यात्रा संघर्ष समिति को देने का निर्णय लिया जो वास्तव में संजीवनी शारदा केन्द्र के लिये भी गौरव की बात है।

आज हमारे लिये यह हर्ष का विषय है कि संघर्ष समिति के

प्रधान श्री लीलाकरण शर्मा जी अपने सहयोगियों, सहकर्मियों और समिति के प्रतिनिधियों के साथ इस उत्सव में सम्मिलित होने के लिये तथा माँ शारदा का आशीर्वाद पाने के हेतु पधारे हैं। हम उनका स्वागत करते हुए विनम्र निवेदन करते हैं किं 'श्री अमर नाथ यात्रा संघर्ष समिति' के प्रधान के नाते 'शारदा पुरस्कार' ग्रहण करें।

हम आप सब बन्धुओं के महान आदर्श के सम्मुख नतमस्तक हैं। बन्धुवर! मेरी बात पर विश्वास कीजिये कि 'शारदा पुरस्कार' माँ का आशीर्वाद है श्री अमर नाथ यात्रा संघर्ष समिति के लिये। मां का प्रसाद है समिति के प्रत्येक सदस्य के लिये। और प्रज्वलित प्रकाश का ज्योति पुंज है जम्मू संभाग के जन मानस के लिये।

इस वर्ष हम ने केवल संघर्ष समिति को ही सम्मानित करने का निर्णय लिया जो समय की पहचान के अनुकूल भी है और उचित भी।

मैं आज की सभा के मुख्य अतिथि एवं संजीवनी शारदा केन्द्र के प्रधान श्री टी. एन. पण्डिता जी से निवेदन करता हूँ कि आदरणीय लीलाकरण शर्मा जी को अंगवस्त्र प्रदान करते हुए 'शारदा पुरस्कार' 2008 ई० से सम्मानित करें।

संजीवनी शारदा केन्द्र
एक संक्षिप्त परिचय

शारदा के वैभवशाली स्वरूप की प्रतिष्ठा बचाये रखने हेतु अपने धर्म समाज एवं राष्ट्र के प्रति अनुराग एवं कर्तव्य भावना को सुदृढ बनाने हेतु 'संजीवनी शारदा केन्द्र की स्थापना शारदाष्टमी (2-9-1995) के दिन जन्मू क्षेत्र के आनन्दनगर (बोडी) में हुई। केन्द्र की स्थापना के पीछे केवल यही संकल्प निहित है कि शारदापीठ (कश्मीर) की गरिमा अद्वितीय रुप से संसार के आकाश में पुनः चमक उठे। इसी संकल्प को साकार करने हेतु तथा अपने गौरवशाली पूर्वजों की धरोहर की क्षतिपूर्ति के लिए केन्द्र ने अपनी गतिविधियां चलाने हेतु कुच्छ कार्य–क्षेत्र एवं लक्ष्य स्थापित किये हैं, यथा–

1. शारदा भवन का निर्माण।
2. मुख्य धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक उत्सवों का सामूहिक आयोजन।
3. जनहित अभियान के अन्तर्गत व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्रों की व्यवस्था।
4. कश्मीर–संस्कृति एवं इतिहास के संदर्भ में शोध कार्य।
5. शारदा लिपि एवं संस्कृत भाषा का पठन–पाठन।
6. एक भव्य पुस्तकालय की स्थापना।
7. प्रकाशन प्रभाग की स्थापना।

अपनी गतिविधियों को सुचारू ढंग से चलाने हेतु आनन्दनगर बोड़ी में खरीदे एक भूमि खण्ड पर शारदाभवन का निर्माण हो चुका है।

युवा वर्ग को स्वावलंबी बनाने के उद्देश्य से योजना बद्ध रूपसे

कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। केन्द्र को एक बहु–आयामी संस्थान के रूप में विकसित करने की योजना है। इसी संदर्भ में केन्द्र द्वारा एक वर्षीय पाठ्यक्रम पर आधारित बिजली, रेडियो एवं टी० वी का प्राथमिक प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

केन्द्र के परिसर पर ही युवावर्ग को कम्प्यूटर–प्रशिक्षण दिये जाने हेतु शारदा कम्प्यूटर प्रशिक्षण 'संस्थान' की स्थापना की गई है। यह संस्थान युवक समाज को भिन्न–भिन्न पाठ्यक्रमों के आध ाार पर प्रशिक्षण दे रहा है।

शोध की दिशा में केन्द्र प्रयासरत है। कश्मीरी पण्डितों की सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से पुरातत्व, इतिहास, धर्म, दर्शन, भाषा, सहित्य, लिपि, लोक–जीवन और लोक–कलाओं से संबंधित अनुसंधान कार्य को प्रोत्साहन देकर विशेष कार्यक्रमों एवं विचार–गोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है।

केन्द्र द्वारा गठित समाज एवं संस्कार समिति की देख–रेख में विशेष धार्मिक संस्कारों को सामूहिक रूप से आयोजित करने के अन्तर्गत कई बार सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार समारोहों का आयोजन हुआ है।

केन्द्र की महोत्सव समिति मुख्य धार्मिक एवं सांस्कृतिक उत्सवों का सामूहिक आयोजन करती है। मुख्यरूप से 'शारदाष्टमी' और 'महशिवरात्रि' महोत्सवों का आयोजन उल्लेखनीय हैं। 'शारदाष्टमी' समारोह के अवसर पर एक महा यज्ञ रचाने के अतिरिक्त समाज के प्रति समर्पित किन्ही 'दो' महानुभावों को 'शारदा–पुरस्कार' से सम्मानित किया जाता है। महाशिवरात्रि के अवसर पर केन्द्र की ओर से एक वार्षिक प्रेरणा चित्र जनता को भेंट किया जाता है।

भारतीय जीवन मूल्यों के प्रचार के लिये उपयोगी साहित्य के प्रकाशन एवं वितरण की व्यवस्था करने हेतु 'प्रकाशन–प्रभाग' का

गठन हुआ है। प्रकाशन–प्रभाग द्वारा कश्मीर के महापुरुषों एवं तीथस्थलों पर आधारित कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

समय–समय पर केन्द्र द्वारा शारदा लिपि के पठन–पाठन एवं लेखन हेतु कक्षाऐं आयोजित की जाती हैं। इसके अतिरिक्त 'संस्कृत–संभाषण' कक्षाओं की व्यवस्था भी की जाती है।

जनता को धार्मिक, सांस्कृतिक एवं केन्द्र द्वारा प्रकाशित सहित्य सुलभ रखने हेतु एक 'वस्तु–भण्डार की व्यवस्था की गई है।

एक भव्य पुस्तकालय की स्थापना भी केन्द्र का एक लक्ष्य है। कई महत्वपूर्ण पुस्तकें केन्द्र के पुस्तकालय में आज उपलब्ध हैं। और हर वर्ष पुस्तकों मे वृद्धि हो रही है।

इसके अतिरिक्त केन्द्र की मातृ–शक्ति इकाई तथा विद्यार्थी इकाई द्वारा विकास के कार्यक्रम आयोजित होते हैं। इनमें महिला व्यावसयिक केन्द्र एवं युवावर्ग में ज्ञान–प्रतियोगितायें उल्लेखनीय हैं।

शारदाभवन के भव्य कक्ष में एक 'चित्र–शाला' का निर्माण भी एक विशेष उपलब्धि हैं। इस चित्र–शाला में कश्मीरी सन्त–महात्माओं एवं समाज सेवियों के चित्रों का प्रदर्शन है।

शारदा भवन के निर्माण के अन्तर्गत प्रथम तल पर निर्मित भव्य कक्ष कश्मीर के प्रसिद्ध संत कवि श्री कृष्णजू राज़दान के नाम समर्पित है। इसी कक्ष में केन्द्र का पुस्तकालय एवं शोध–संस्थान स्थापित है।

केन्द्र आयकर विभाग के साथ पंजीकृत हैं जिसके अन्तर्गत केन्द्र को धारा 80G की सुविधा भी प्राप्त है।

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]
9. [illegible]
10. [illegible]

[illegible] एवं [illegible]

[illegible] एवं [illegible] की [illegible] की व्यवस्था भी [illegible]

[illegible] एवं [illegible] शब्द-भण्डार [illegible]

[illegible] पुस्तकालय की स्थापना भी [illegible] है। [illegible] पुस्तकालय में [illegible] है। [illegible] पुस्तकों से [illegible] हो रही है।

इसके अतिरिक्त [illegible] मातृ-शक्ति [illegible] विद्यार्थी [illegible] कार्यक्रम आयोजित होते [illegible] महिला [illegible] में ज्ञान-प्रतियोगिता [illegible] प्रशंसनीय है।

[illegible] एक चित्र-शाला का निर्माण भी [illegible] चित्र-शाला में कश्मीरी संतों, महात्माओं एवं [illegible] के चित्रों का प्रदर्शन है।

[illegible] के अन्तर्गत प्रथम तल [illegible] भवन [illegible] के कारण [illegible] पुस्तकालय एवं शोध-संस्थान स्थापित है।

केन्द्र [illegible] के साथ पंजीकृत है जिससे [illegible] केन्द्र को [illegible] की सुविधा भी प्राप्त है।

संजीवनी शारदा केन्द्र द्वारा प्रकाशित साहित्य

1. शारदा (ग्राम एवं तीर्थ)
2. हेरथ (अरव ज़ान)
3. Kshemendra
4. उमा नगरी
5. परमानन्द
6. कृष्ण जू राज़दान
7. Lalleshwari
8. Jonraja
9. परा प्रावेशिका
10. महाशिवरात्रि (कश्मीरी पद्धति)